मैथिली गजलक Ready Reckoner

आशीष अनचिन्हार

विदेह-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका (विदेहwww.videha.co.in) पेटारसँ



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

विषय सूची

मैथिली गजलक Ready Reckoner

आशीष अनचिन्हार

समर्पण

सिरजनहारकेँ

अनचिन्हारक बात

Ready Reckoner आर्थिक, विज्ञान जमीन-जायदाद आदि क्षेत्रमे प्रयोग होइत छै। Ready Reckoner केर समान्य परिभाषा छै- कोनो सूचनाकेँ संक्षिप्त मुदा एहन विशिष्ट अंदाजमे प्रस्तुत करब जाहिसँ ओकरा पढ़ए बलाकेँ कम समयमे बेसी ओ सटीक सूचना भेटै। ई Ready Reckoner अधिकांशतः टैक्स केर काज करए बला लग अहाँ सभ देखने हेबै। भारत सरकारक हेरक बजट केर बाद विस्तृत रिपोर्ट आ ओकर Ready Reckoner दूनू विभिन्न प्रकाशक द्वारा प्रकाशित होइत छै। जाहि Ready Reckoner केर लेखक जतेक नीक अंदाजमे सूचना दै छै से ततेक नीक होइत छै। मुदा Ready Reckoner केर एकटा दोष ई छै जे जाहि क्षेत्रक Ready Reckoner होइत छै ओहि क्षेत्रक बेसिक जानकारी राखहे बला ओहि Ready Reckoner केँ बूझि सकै छथि आ ओकर नीक प्रयोग कऽ सकै छथि। Ready Reckoner में सूचना बनल बनाएल भेटै छै तँइ एहिमे कांसेप्ट कम आ आँकड़ा बेसी भेटत। साहित्यमे Ready Reckoner केर विषय-वस्तु लिखित रूपमे नै एलैए मुदा ई बात सत्य जे जँ सहित्य केर कोनो विधा छंद आधारित छै तँ ओकर Ready Reckoner बनाएल जा सकैए। एक अर्थमे छंदशास्त्रकेँ पद्य प्रभागक Ready Reckoner कहि सकैत छियै। छंदक आन विधा संग एकटा विधा गजलो छै मुदा आन पद्य ओ गजलमे बड़का अंतर ई जे आन छंद दोहा, रोला, हरिगीतिका आदि लेल ओकर एक-एकटा निश्चित नियम ओ छंद छै मुदा गजलमे एहन नै। गजल लेल असंख्य छंद (बहर) छै (मुदा एक गजलमे अंत धरि एकै बहरक पालन करए पड़त। एहन नै जे एक गजलक पहिल पाँतिमे एक बहर तँ दोसर पाँतिमे दोसर बहर)। जेना 1222-1222-1222-1222 मे गजल सेहो हेतै तँ 2122-2122-2122-2122 मे सेहो तेनाहिते आर कोनोमे सेहो। एकर अतिरिक्त रुक्नक संख्या घटा-बढ़ा कऽ सेहो नया-नया बहर बना सकैत छी। कहबाक मतलब जे आन छंदक मुकाबले गजल बहुत बेसी

व्यापक आ जटिल प्रभाग छै काव्यक। एहि Ready Reckoner कैँ तैयार करैत काल एक-दूटा हमर अपने गलती पकड़ाएल जे काफिया बला भागमे अछि आ जाहिठाम अछि ताहिठाम सूचित कऽ देल गेल अछि जाहिसँ पाठक 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास' बला पोथीक ओहि नियमकैँ एहिठामक नियम बूझथि। छै तँ गलती मुदा हम एकरा मानै छी। ओना 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास' प्रकाशनक बाटपर अछि तँइ ओहिमे कोनो जोड़-घटाउ संभव नै बुझना जाइए तँइ ओहि एक-दू नियम लेल एही पोथीकैँ देखब से उम्मेद अछि। एकर अतिरिक्त आन सभ नियम समान रहत। सभ पाठक सभसँ हम आग्रह करब जे गजलक कांसेप्ट बुझबाक लेल ओ Ready Reckoner नै कोनो विस्तृत पोथी पढ़थि। जरूरी नै छै जे हमरे बला पढ़थि। आनो भाषा जेना हिंदी-अंग्रेजीमे गजल ओ बहर-काफिया संबंधी जानकारी छै जकरा ओ पढ़ि सकै छथि। एहि पोथीक कोनो नियममे कोनो उलझन होइन वा किनको आलोचना करबाक होइन तँ ओ सभसँ पहिने 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास' पढ़थि, भऽ सकैए जे ओ पढ़लाक बाद हुनकर उलझन वा शिकायत खत्म भऽ जाइन।

-आशीष अनचिन्हार

खण्ड-1

गजलमे दू पक्ष छै तकनीकी वा छंदशास्त्रीय आ दोसर भाव पक्ष। गजल लेल दूनू पक्ष बराबर मात्रामे चाही। छंदसँ कम भाव अछि तैयो गजल नै भेल आ भावसँ कम छंद अछि तैयो गजल नै भेल। मुदा तकनीकी वा छंदशास्त्रीय पक्ष गजलक पहिल चरण छै आ भाव पक्ष दोसर। मोन राखू कोनो रचना लेल भाव पक्ष पहिल चरण हेतै मुदा कोनो विधा लेल ओकर पहिल चरण तकनीक हेतै। प्रस्तुत पोथी गजलक तकनीकी वा छंदशास्त्रीय पक्षपर अछि। भाव पक्ष लेल 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास' पढ़ल जाए। ओनाहुतो भाव जे छै से कोनो लेखक केर अनुभवक परिष्कृत रूप छै। जकर जतेक अनुभव तकरा ततेक नीक भाव एतै मोनमे। गजलक तकनीकी पक्ष तीन खंडमे छै- बहर, काफिया ओ रदीफ। बहर माने गजलक पहिल दू पाँति अथवा मतलामे जे मात्राक्रम छै तकर पालन गजलक आन सभ शेरमे समान रूपसँ हो तकरा बहर कहबै। काफिया तुकांत भेल आ रदीफ गजलक एकटा एहन अंग भेल जाहिमे कोनो परिवर्तन नै भऽ सकैए। कम समयमे गजल सिखबाक लेल पहिने बहरक अंभ्यास करू तकर बाद काफियाक आ तकर बाद रदीफक आ अंतमे सौती मोशायराक अभ्यास अपनेसँ करू। तँ पहिने बहरपर आबी। बहर लेल लघु-गुरू (ह्रस्व-दीर्घ) केर निर्धारण करब बहुत महत्वपूर्ण छै। कोन अक्षर लघु आ कोन अक्षर गुरू से जनबाक लेल नीचा देखू--

1) अक्षर दू प्रकार होइत छै। स्वतंत्र रूपसँ बाजल जाएबला अक्षर 'स्वर' कहाइ छै आ जकरा स्वरक सहायतासँ बाजल जाइत हो ओकरा व्यंजन कहल जाइत छै। स्वर दू तरहँक होइत छै- पहिल ह्रस्व स्वर आ दोसर दीर्घ स्वर। अ, इ, उ, ऋ, लृ आदिह्रस्व स्वर भेल तँ आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ. अं. अः आदि दीर्घ स्वर। दूनू स्वरक मात्रा सेहो छै (ा (आ केर मात्रा), ि (इ केर मात्रा), ी (ई केर मात्रा), ु (उ केर मात्रा),ू (ऊ केर मात्रा), ृ (ॠ केर मात्रा), े (ए केर मात्रा), ै (ऐ केर मात्रा), ो (ओ केरमात्रा), ौ (औ केर मात्रा) ं (अनुस्वा केर मात्रा), ः (विसर्ग केर मात्रा)। ह्रस्वस्वरकेँ बाजएमे कम समय लागै छै तँ दीर्घ स्वरकेँ बाजएमे बेसी। स्वरक अतिरिक्त आन अक्षर सभ एना अछि--कवर्ग--क्, ख्, ग्....चवर्ग--च्, छ्, ज्...............आब एही अक्षरमे जँ “अ”

स्वर जोड़बै तँ ओ व्यंजन बनि जाएत। बिना स्वरक अक्षर आधा होइत छैआ ओकरा हलंत चिन्हसँ देखाएल जाइत छै। व्यंजनमे ह्रस्व-दीर्घ मात्रा कि अनुस्वार-विसर्ग लगा कऽ आन अक्षर बनाएल जाइत छै। उदाहरण देखू--क्+अ= क , ख्+अ+आ= खा , ग्+अ+इ= गि , च्+अ+ई= ची , छ्+अ+उ= छु , ज्+अ+ऊ= जू , झ्+अ+ए= झे , ट्+अ+ऐ= टै , ठ्+अ+ओ= ठो , ड्+अ+औ=डौ , क्+अ+ं= कं , त्+अ+ः= तः मने “क” लघु भेल, “का” दीर्घ भेल, “कि” लघु भेल, “की” दीर्घ भेल, “कु” लघु भेल, 'कू” दीर्घ भेल, “के” दीर्घ भेल, “कै” दीर्घ भेल, “को” दीर्घ भेल, “कौ” दीर्घ भेल “कं” दीर्घ भेल, “कः” दीर्घ भेल। क्ष, त्र, ज्ञ एवं श्र ई चारू संयुक्ताक्षर अछि। एवं अपना आपमे ई लघु अछि मुदा ई अपनासँ पहिने आबए बला अक्षरकेँ दीर्घ बना दैत छै जकर विवरण आगू भेटत।

2) अनुस्वार तँ दीर्घ अछि मुदा चन्द्रबिन्दु लघु। चन्द्रबिन्दु जँ लघु अक्षरपर रहतै तँ लघु मानल जेतै आ जँ दीर्घ अक्षरपर रहतै तँ दीर्घ मानल जाएत। मुदा अनुस्वार लघु केर उपर हो कि दीर्घक उपर अनुस्वार सदिखन दीर्घे होइत छै।

3) जँ कोनो शब्दमे संयुक्ताक्षर हुअए तँ ताहिसँ पहिलेक अक्षर दीर्घ भए जाइत छैक चाहे ओ लघु किएक ने हुअए। उदाहरण लेल--प्रत्यक्ष शब्दमे दूटा संयुक्ताक्षर अछि पहिल त्य एवं क्ष। आब एहिमे देखू “त्य”सँ पहिने “प्र” अछि तँए ई दीर्घ भेल आ “क्ष”सँ पहिने “त्य” अछि तँए इहो दीर्घ भेल। ई नियम जँ दू टा अलग-अलग शब्द हो तैयो लागू हएत जेना उदाहरण लेल--हमर प्रेम छी अहाँ... ऐमे “प्रे” संयुक्ताक्षर भेल आ ताहिसँ पहिने बला शब्द “र” दीर्घ भए जाएत। मतलब जे “हमर” शब्दक अंतिम अक्षर “र” दीर्घ भए जाएत। सङ्गे-सङ्ग मोन राखू “न्ह” आ “म्ह” संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला शब्दमे लघु दीर्घ सेहो हएत। जेना की “कुम्हार” मे “म्ह”सँ पहिने “कु” दीर्घ भेल तेनाहिते “कन्हाइ” शब्दमे सेहो “न्ह”सँ पहिने “क” अक्षर दीर्घ भेल। क्ष, त्र आ ज्ञ संयुक्ताक्षर अछि। तेनाहिते.... प्र, र्व, आदि सेहो संयुक्ताक्षर अछि। मुदा “मृत” शब्दमे “मृ” संयुक्ताक्षर नै अछि कारण ॠ लघु स्वर छै आब अहाँ सभ पूछि सकै छी जे “मृत” मे “मृ”

संयुक्ताक्षर किएक नै भेल। तँ हम कहब जे संयुक्ताक्षर लेल ओहि अक्षरकेँ आधा होमए पड़ैत छै जैमे कोनो दोसर अक्षर संयुक्त हेतै। जेना--
“प्रेम” = प्+र+ए+म=प्रेम
अर्थात “प” अक्षर आधा भेलै तँए ई संयुक्ताक्षर अछि। मुदा
“मृत” = मऋत=मृत
तँए मृत शब्दमे मृ संयुक्ताक्षर नै भेल। ऋ मात्रा भेल। ऐठाँ ई मोन राखब बड़ बेसी आवश्यक अछि जे “ऋ” आ “ॠ” केर उच्चारण एखन गलत अछि। जेना की पता अछि जे “इ” एवं “ई” स्वर जकाँ “ऋ” आ “ॠ” सेहो स्वर अछि, एकरा ह्रस्व “ऋ” आ दीर्घ “ॠ” कहल जाइत छै। वर्तमान समयमे दीर्घ “ॠ” केर प्रचलन नै अछि आह्रस्व “ऋ” केर गलत उचचारण प्रचलित अछि। जेना “कृष्ण” एकर उच्चारण एखन “क्रिष्ण” अछि। शुद्ध उच्चारण सुनबा लेल अरविंद आश्रम वा गुजरात समेत दक्षिण भारतक कोनो संस्कृत शिक्षणशालामे अध्ययनकएल जा सकैए)।
4) विसर्ग युक्त लघु अक्षर दीर्घ होइत अछि जेना अतः =12
5) गजलमे दूटा लघुकेँ एकटा दीर्घ सेहो मानल जाइत छै मुदा कोन दू लघुकेँ दीर्घ मानल जाए से निच्चा देखल जाए आ तकर बाद ओहिसँ बेसी अक्षरक शब्दक सेहो देखू—
a) दू अक्षरसँ बनल शब्दक दोसर अक्षरपर आघात रहै छै तँइ एकरा दीर्घ मानू मने “घर” = 2 दीर्घ (संस्कृतमे लघु-लघु)
b) तीन अक्षरसँ बनल शब्दमे स्पष्टतः पहिल अक्षर अलग आ बादक दू अक्षर अलग होइत छै जेना बिगड़ि= बि-गड़ि मने 12, पहिल=प-हिल मने 12
c) चारि लघु अक्षरसँ बनल शब्द दू भागमे बँटि जाइतछै जेना भिनसर=भिन-सर मने 22, कबकब=कब-कब मने22
d) पाँच लघु अक्षरसँ बनल शब्दमे तीन आ दू अक्षर बना नियम लागत जेना चहटगर=च-हट-गर मने 122
e) छह लघु अक्षरसँ बनल शब्दमे तीन अक्षर बला नियम लागत जेना चपलचरण=च-पल-च-रण मने 12-12

6) प्लुत----” दूराह्वाने च गाने च रोदने च प्लुतो मतः॥” इति च दुर्गादासधृतवचनम्॥ मने दूर लोककेँ बजबए लेल,गेबाक कालमे वा कनबा कालमे किछु शब्दकेँ रेघा कऽ उच्चरित कएल जाइ छै आ तँइसँ ओकर मात्रा दीर्घसँ बेसी भऽ जाइत छै मने तीन मात्रिक। मुदा ई प्लुत वर्तमान सभ भारतीय भाषासँ हटि गेल अछि। मुदा उर्दूमे ई एखनो पालन कएल जाइत छै जेना उर्दू बला सभ "रास्ता" केर बहर दीर्घ लघु दीर्घ मानै छथि। तेनाहिते दोस्ती एवं एहने सन शब्द लेल मानू। ओना पिंगल कृत छंदः सूत्रम् हिसाबसँ छंद शास्त्रमे प्लुत केर प्रयोग आ नियमक कोनो विधान नै छै (पिंगल कृत छंदः सूत्रम् डा. कपिलदेव द्विवेदी, डा. शयाम लाल सिंह)। आन शब्द लेल एहने सन बुझू। विभक्ति जुटलाक बाद मात्राक्रम सेहो बदलऽ लागै छै। जेना “इज्जत” ई 22 अछि। “इज्जतक” आब एकरा 221 सेहो मानल जा सकैए मुदा 212 बेसी उचित कारण विभक्ति सटलाक बाद “इज्” लेल2 फेर “ज” लेल 1 “तक” लेल 2 मने212 बेसी उचित अछि। तखन हम फेर कहब जे शाइर ई अपने देखथि जे कोन मात्राक्रम लेलासँ बेसी प्रवाह आबि रहल छै। विभक्तिए जकाँ उपसर्ग वा प्रत्ययसँ सेहो मात्राक्रम बदलल सन लागऽ लागै छै। जेना कुशल मूल शब्दमे स उपसर्ग लगलासँ सकुशल शब्द बनै छै। आब जँ सकुशल शब्दक उच्चारणपर धेआन देबै तँ स केर उच्चारण अलग आ कुशल केर उच्चारण अलग होइ छै। एहन स्थितिमे सकुशल केर मात्रा 112 मानब बेसी उचित। आन एहन शब्द सभ लेल इएह बुझू।

आब किछु शब्द ओ वाक्य केर अभ्यास करी--

पार्वती=212, गेलथि= 22, नैहर=22 अपना=22 मोने=,22

अग्रिम= 22 प्रत्यक्ष=,221 भुगतान =221, करथि= 22, महाजन=122

ई तँ भेल अलग=अलग शब्दक मात्राक्रम मुदा अही मात्राक्रमकेँ पाँतिमे सजा देलापर मात्राक्रम बदलि सेहो जाइत छै। उदाहरण लेल उपरक एकटा पाँतिकेँ लै छी- अग्रिम= 22 प्रत्यक्ष=,221 भुगतान =221, करथि= 22, महाजन=122 तँ खाली शब्दक हिसाबसँ मात्राक्रम अहाँ कहबै अग्रिम= 22 प्रत्यक्ष=,221 भुगतान =221, करथि= 22,

महाजन=122 तँ से गलत हएत। ई पाँतिक स्वरूप एना बहन- अग्रिम प्रत्यक्ष भुगतान करथि महाजन आब एकर मात्राक्रम हेतै 212-221-221-22-122 गौरसँ देखबै तँ पता लागत जे अग्रिम केर 'म' प्रत्यक्ष केर 'प्र' कारणे दीर्घ भऽ गेलै। ई संस्कृतक नियम छै आ हम एकरे मानै छी। किए मानै छी से जनबाक लेल हमर ओ पोथी पढ़ू। आर किछु शब्द लिअ- कन्हाइ=221, चुल्हा= 22, जरा= 12, कुम्हार=221, लग=2, चलि=2, गेल=21 एनाहिते किछु शब्द लिअ ओकर मात्राक्रम निकालू आ फेर ओही शब्द सभकेँ एक पाँतिमे सजा कऽ फेरसँ मात्रा निर्धारण करू। दू दिनक अभ्यासमे पारंगत भऽ जाएब। अतेक केलाक बाद सौती मोशायराक अभ्यास करू। अरबी-फारसी-उर्दूमे शाइर सभकेँ बहरक ट्रेनिंग लेल ई सौती मोशायरा केर आयोजन कएल जाइत छै। ऐ मोशायरामे जे गजल देल जाइत छै ताहिमे अर्थकेँ कोनो प्रधानता नै रहै छै बस खाली बहर, काफिया आ रदीफ रहबाक चाही। जेना की एकटा उदाहरण देखू---

उठैए चलैए खसैए तँ ओ
हँसैए मरैए गबैए तँ ओ

छलै आब बुड़िबक बहुत सभ मुदा
हुनक पाँचटा सन लगैए तँ ओ

पहिने ऐ दूटा शेरक मात्रा क्रम देखी ई मात्रा क्रम अछि 122-122-122-12 आब कने पहिल शेरकेँ देखू कोनो खास अर्थ नै निकलि रहल छै ऐ शेरक। तेनाहिते दोसर शेर तँ आर गड़बड़ अछि। मुदा इएह गड़बड़ी सौती मोशायरा लेल चाही। जँ सौती मोशायरामे एकौटा एहन शेर आबि गेल जकर कोनो सार्थक मतलब निकलि रहल छै तँ ओ सौती मोशायरा लेल उपयुक्त नै। ई सौती मोशायरा अपनेसँ लगभग तीन-चारि दिन करू। एक सप्ताहमे बहरक ट्रेनिंग भऽ जाएत। गजलक संदर्भमे शब्दक मात्राक्रमकेँ एना बूझू। छन्दकेँ अरबीमे बहर कहल जाइत छै। गजल सदिखन कोने ने कोने बहरमे होइत छैक। बिना

बहरक गजलक कल्पना असंभव। ई स्पष्ट करब जरूरी जे गजल लेल छंद वर्णिक होइ छै मने गजलक हरेक पाँति एक समान मात्राक्रममे रहए। किछु लोक “एकसमान मात्राक्रम” आ “एक समान मात्रा” दूनूकेँ एकै बूझि लै छथि से गलत। जेना छन्दक आधार लय होइत छैक तेनाहिते बहरक आधार अरूज वा अरूद होइत छैक। अरूज वा अरूद मने शेर मे निहित मात्राक्रम होइत छैक। अरूज वा अरूदके वज़न सेहो कहल जाइत छैक।

अरबी साहित्यमे बहर तीन खण्डमे बाँटल गेल अछि 1) सालिम मने मूल बहर, 2) मुरक्कब मने मिश्रित बहर आ 3) मुदाइफ वा मुजाइफ मने परिवर्तित बहर।

अरबीमे सालिम मने मूल बहर मे 7 टा बहर अबैत अछि। आ मुरक्कबमे 269 टा। मुदा ऐ 269मेसँ मात्र 20टा प्रचलित अछि। हम अपना सुविधा लेल मुरक्कब बहरकेँ दू खण्डमे बाँटि देने छी। संगहि-संग सालिम बहरके हम “समान बहर” नाम देने छिऐक। आ मुरक्कब बहरक पहिल खण्ड (जाहिमे कुल सात टा बहर अछि) तकरा अर्धसमान बहर नाम देलिऐक आ मुरक्कब बहरक दोसर खण्ड जाहिमे तेरह टा बहर अछि तकर नाम “असमान बहर” देलिऐ। तँ आब एकर विवरण निच्चा देखू।

बहरसँ पहिने रुक्नकेँ बूझी। संस्कृतक गण जकाँ अरबी मे सेहो होइत छैक जकरा “रुक्न” कहल जाइत छैक। ई रुक्न आठ प्रकारके होइत अछि। जकर विवरण एना अछि—

रुक्नक स्वरूप	**मात्रा**	**रुक्नक नाम**	**मात्रा क्रम**
खमासी रुक्न	5	फऊलुन (फ/ऊ/लुन)	122 (1/2/2)
खमासी रुक्न	5	फाइलुन (फा/इ/लुन)	212 (2/1/2)
सुबाई रुक्न	7	फाइलातुन (फा/इ/ला/तुन)	2122 (2/1/2/2)
सुबाई रुक्न	7	मफाईलुन (म/फा/ई/लुन)	1222 (1/2/2/2)
सुबाई रुक्न	7	मुस्तफइलुन (मुस्/तफ/इ/लुन	2212 (2/2/1/2)
सुबाई रुक्न	7	मुफाइलतुन (मु/फा/इ/ल/तुन	12112 (1/2/1/1/2)
सुबाई रुक्न	7	मुतफाइलुन (मु/त/फा/इ/लुन	11212 (1/1/2/1/2)
सुबाई रुक्न	7	मफऊलातु (मफ/ऊ/ला/तु	2221 (2/2/2/1)

****** एहिठाम 1 मने 1 मने ह्रस्व आ 2 मने 2 मने दीर्घ भेल संगे-संग खमासी मने पाँच मात्राक आ सुबाई मने सात मात्राक रुक्न भेल (केओ-केओ दीर्घ लेल + आ लघु लेल   केर प्रयोग करै छथि। संस्कृतमे I दीर्घ लेल आ U लघु लेल चिन्ह अछि।) लघु= ह्रस्व, दीर्घ=गुरु । एहि रुक्न सभकेँ इयाद रखबाक लेल गणितीय रूपसँ एना बुझू--

a) एकटा लघुकेँ बाद जँ दूटा दीर्घ हो तँ ओकरा “फऊलुन” कहल जाइत छैक।

b) एकटा लघुकेँ बाद जँ तीनटा दीर्घ हो तँ ओकरा “मफाईलुन” कहल जाइत छैक।

c) जँ “मफाईलुन” केँ उल्टा करबै तँ “मफऊलात” बनि जाएत मने तीनटा दीर्घकेँ बाद एकटा लघु।

d) दूटा दीर्घकेँ बीचमे जँ एकटा लघु रहए तखन ओकरा “फाइलुन” कहल जाइत छैक।

e) “फाइलुन” केर अन्तमे जँ एकटा आर दीर्घ जोडबै तँ ओ “फाइलातुन” बनि जाएत।

f) “फाइलातुन” केर उल्टा रूप “मुस्तफइलुन” होइत छैक।

g) शुरुमे एकटा लघु तकरा बाद एकटा दीर्घ तकरा बाद फेर दूटा लघु आ तकरा अन्तमे एकटा दीर्घ हो तँ “मुफाइलतुन” कहल जाइत छैक।

h) “मुफाइलुन” केर अन्तसँ तेसर या दोसर लघु हटा कए पहिल लघु लग बैसा देबै तँ “मुतफाइलुन” बनि जाएत। मने शुरुमे दू टा लघु तकरा बाद एकटा दीर्घ तकरा बाद फेर एकटा लघु आ तकरा बाद अन्तमे एकटा दीर्घ।

कोनो गजलक नाम ओकर बहरसँ होइत छै तकर बाद ओहिमे रुक्नक संख्या जोड़ल जाइत छै आ तकर बाद ओहि रुक्नक प्रकृति सेहो उल्लेख कएल जाइत छै तखन ओहि कोनो गजल पूरा नाम बने छै। तँ आउ देखी किछु उदाहरण--

1) मोसन्ना (मुसना) (एक) एहन गजल जकर हरेक शेरक पाँतिमे एकटा रुक्न हो (मने एकटा शेरमे 2 टा रुक्न) ओकरा मोसन्ना (मुसना) शेर कहल जाइत छै। ई संख्यावाची शब्द कोनो बहरमे आबि सकैए। मुसना शेरक एकटा उदाहरण देखू--

दाइ छी हम
माइ छी हम

ऐ शेरक पहिल पाँतिमे 2122 रुक्न मने फाइलातुन अछि आ एकैटा अछि सङ्गहि-सङ्ग सालिम प्रकृतिक अछि तेनाहिते दोसरे पाँतिमे सेहो 2122 रुक्न मने फाइलातुन अछि आ एकैटा अछि सङ्गहि-सङ्ग सालिम प्रकृतिक अछि फाइलातुन बहरे रमल केर मूल रुक्न अछि तँए एहन शेरसँ बनल गजलक नाम हएत बहरे रमल मोसन्ना (वा मुसना) सालिम। एकरा एनाहुतो कहि सकै छी बहरे रमल सालिम दू रुक्नी।

आब दोसर गजलमे बहरे रमलक बदला बहरे हजज वा बहरे रजज सेहो आबि सकैए आ एनाहिते नामकरण करऽ पड़त । आन संख्या लेल नाम आगू देल जा रहल अछि—

2) मोरब्बा (दू) एहन शेर जकर हरेक पाँतिमे दूटा रुक्न होइ मने पूरा शेरमे चारिटा । एकर नाम हेतै बहरे रमल मोरब्बा सालिम वा बहरे रमल सालिम चारि रुक्नी।

3) मोसद्दस (तीन) बहरे रमल मोसद्दस सामिल वा बहरे रमल सालिम छह रुक्नी।

4) मोसम्मन (चारि) बहरे रमल मोसम्मन सालिम वा बहरे रमल सालिम अठरुक्नी।

5) मोअश्शर (पाँच) बहरे रमल मोअश्शर सालिम वा बहरे रमल सालिम दसरुक्नी।

अतेक बुझलाक बाद आब चली आब चली गजलपर---

खण्ड-2

हमरा लोकनि बैसल छी अरबी-फारसी-उर्दूक लोकप्रिय शाइरी विधा गजलपर चर्चा करबाक लेल। मुदा गजलपर चर्चा करबासँ पहिने दू टा गप्प जानि लेब जरूरी पहिल ई जे मैथिलीमे “ग” आ “ज” आदिमे नुक्ता नै लागै छै तँइ मैथिलीमे “ग़ज़ल” शब्द गलत अछि आ “गजल” शब्द सही दोसर गप्प ई जे गजल लेल सही काफिया, एक समान बहर आ दमदार कहन मूल तत्व होइत छै आ एकर सभहँक अक्षरन आगू कएल गेल अछि। गजल किछु शेरक संग्रह होइत छैक (कमसँ कम पाँच आ बेसीसँ बेसी कतबो)। आब ई बूझी जे शेर की थिक। शेर सदिखन दू पाँतिक होइत छैक आ शाइर जे कहए चाहैत अछि ओ दुइये पाँति मे खत्म भए जेबाक चाही, अन्यथा ओ गजलक लेल उपयुक्त नहि। आ एहन-एहन गजल जकर हरेक शेरमे अलग-अलग बात कहल गेल हो ओकरा “गैर मुसल्सल” गजल कहल जाइत छैक। किछु गजल एहनो होइत छैक जकर हरेक शेर एकै विषय पर रहैत छैक। एहि प्रकारक गजलके “मुसल्सल” गजल कहल जाइत छैक, मुदा “मुसल्सल” गजल बेसी नीक नहि मानल जाइत छै। उर्दूमे पाँतिकेँ “मिसरा” कहल जाइत छैक। शेरक पहिल पाँतिकेँ “मिसरा-ए-उला” आ दोसर पाँतिकेँ “मिसरा-ए-सानी” कहल जाइत छैक। शेरक किछु उदाहरण देखू-

न कम सम बहुत नहि समावेश चाही
सधेने चली बेश ऋण शेष चाही

(शाइर- विजय नाथ झा)

टूटल छी तँइ गजल कहै छी
भूखल छी तँइ गजल कहै छी

(जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल)

रहू कमल सन सदा सुवासित
बनू मनोहर हवा सुवासित

(शाइर- योगानंद हीरा)

गजलमे प्रयुक्त किछु शब्दावली

1) **मतला---**" मतला" गजलक ओहि पहिल शेरके कहल जाइत छैक जकर दूनू पाँतिमे काफिया आ रदीफ रहै। ओमप्रकाश जीक एकटा गजल उदाहरणक लेल देल जा रहल अछि।

अहाँ केँ हमर इ करेज बिसरत कोना
छवि बसल मोन मे आब झहरत कोना

हवा सेहो सुगंधक लेल तऽ जरूरी
बिन हवा फूलक सुगंध पसरत कोना

अहीं टा नै, इ दुनिया छै पियासल यौ
बिन बजेने इ चान घर उतरत कोना

जवानी होइ ए नाव बिन पतवारक
कहू पतवारक बिना इ सम्हरत कोना

हमर मोन ककरो लेल पजरै नै ए
बनल छै पाथर करेज पजरत कोना

मफाईलुन (ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ) 3 बेर प्रत्येक पाँतिमे।

एहि गजलक पहिल शेरक पहिल पाँतिमे काफिया "अ" स्वरक संग "त" अक्षरक मात्रा अछि (केना से काफिया बला खंडमे पता चलत)। आ रदीफ "कोना" अछि। तेनाहिते शेरक दोसरो पाँतिमे काफिया "अ" स्वरक संग "त" अक्षरक मात्रा अछि आ रदीफ "कोना" अछि।

संगहि-संग ई शेर गजलक पहिल शेर अछि, तँए ई भेल मतला। आब दोसर शेर पर आउ, मतलाक बाद ई कोनो जरुरी नहि छैक जे दूनू पाँतिमे काफिया आ रदीफ हुअए। मुदा मतलाक बला शेरक बाद जे शेर छैक तकर दोसर पाँतिमे काफिया आ रदीफक रहब अनिवार्य। उपरके गजलके देखू मतलाक बाद जे शेर अछि---

हवा सेहो सुगंधक लेल तऽ जरूरी
बिन हवा फूलक सुगंध पसरत कोना

एहि शेरमे देखू पहिल पाँतिमे ने रदीफ छैक आ ने काफिया, मुदा दोसर पाँतिमे काफिया सेहो छैक आ रदीफ सेहो। अन्य शेरक लेल एहने सन बुझू। ओना मतलाक बाद जे मतला आबए तँ ई शाइरक क्षमता के देखबैत छैक आ गजलके आर बेसी सुन्दर बनबैत छैक। तएँ ओकरा हुस्ने-मतला कहल जाइत छैक ।ओना शाइर चाहए तँ गजलक हरेक शेरके मतलाक रूपमे दए सकैए। बिना रदीफक गजल सेहो होइत छैक जकरा “गैर-मुरद्दफ” गजल कहल जाइत छैक मुदा काफिया रहब बिलकुल अनिवार्य।

2) **रदीफ**--रदीफ मतला बला शेरक दूनू पाँतिक ओहि अन्तिम हिस्साके कहल जाइत छैक जे दूनू पाँतिमे समान रूपें बिना हेड़-फेरके आबए। गजल रदीफ संगे सेहो भऽ सकैए आ बिना रदीफक सेहो। मतलामे देल गेल उदाहरण बला शेरके देखू एहिमे “कोना “समान रुपसँ दूनू पाँतिमे अछि अर्थात ई भेल रदीफ। ई रदीफ गजलक हरेक शेरक हरेक दोसर पाँतिमे (मतला बला शेरकेँ छोड़ि) अनिवार्य रुपें अएबाक चाही (जइ गजलमे रदीफक प्रयोग भेल छै)। ओमप्रकाश जीक एकटा आर दोसर मतलाकेँ देखू

नैनक छुरी नै चलाबू यै सजनियाँ
कोना कऽ जीयब बताबू यै सजनियाँ

एहि शेरमे “यै सजनियाँ” रदीफ अछि से स्पष्ट अछि। पूरा गजलमे रदीफ एकै होइत छैक।

रदीफ अक्षरसः एकै समान हो मुदा अर्थ अलग-अलग भए सकैत छै, जेना जेना मतलामे “सार “रदीफ छै तँ ई जरूरी नै जे एकै अर्थ लेल जाए। एकटा “सार “केर अर्थ संबंधवाची भए सकैए तँ दोसर “सार” केर मतलब संक्षेपण सेहो। रदीफक दोष जँ मतलाक बाद बला कोनो शेरक पहिल पाँतिमे (जे बिना काफियाक हो) रदीफ वा रदीफक कोनो भाग अबै छै तँ ई दोष मानल जाइ छै आ एकरा “तकाबुल-ए-रदीफ “कहल जाइत छै। जेना एकटा गजलक उदारहण लिअ (ई गजल हमर लिखल अछि)
गजल

हमरा दया आ दुआ दुन्नू चाही
भगवान संगे खुदा दुन्नू चाही

सभ ठीक छै ठीक छै सभ ठीके छै
कुटियासँ कटिया पता दुन्नू चाही

नेता तँ अछि नीक मिश्रण संसारक
सज्जन मुदा बेठुआ दुन्नू चाही

ऐ क्रांतिमे जोश अनुभव सभ चाही
तँइ बूढ़ संगे युवा दुन्नू चाही

शुभकामना अछि अहाँकेँ सुख सागर
हमरा सजा आ मजा दुन्नू चाही

भौजी जँ हारथि तँ भैयाजी आबथि
हुनका तँ घर आ जथा दुन्नू चाही

ऐ गजलमे रदीफ छै “दुन्नू चाही “आ काफिया छै “आ “स्वर। आब ऐ गजलक चारिम शेरक पहिल पाँति देखू” ऐ क्रांतिमे जोश अनुभव सभ चाही” ऐ पाँतिक अंतमे रदीफक अंतिम भाग “चाही” दोहरा देल गेल छै। आ अरूजी सभ एकरे तकाबुल-ए-रदीफ दोष कहै छथि। ऐ दोषसँ बचबाक उपाय इएह छै जे या तँ ओहि पाँतिमे रदीफक प्रयोग नै करी या नै तँ ओहिसँ पहिने काफिया दए ओकरा हुस्ने-मतला बना ली। जँ रदीफ नमहर छै तँ ओहिमहँक किछु भाग आन शेरक पहिल पाँतिमे आबि सकैए। आब कने दोष युक्त चारिम शेर के एना देखू--

ऐ क्रांतिमे जोश अनुभव सभ लागत
तँइ बूढ़ संगे युवा दुन्नू चाही

मने “चाही “हटि गेलै पहिल पाँतिसँ आ ओकरा बदलामे “लागत” आबि गेलै। आ एना केलासँ ई दोष हटि गेलै। एकटा आर महत्वपूर्ण गप्प केखनो काल कए एहन शब्द आबि जाएत जे रहत तँ एकैटा शब्द (मूल शब्द सेहो भए सकैए, सन्धि बला शब्द सेहो भए सकैए सङ्गे-सङ्ग प्रत्यय वा उपसर्ग बला शब्द सेहो भए सकैए) मुदा ओहि शब्दमे काफिया आ रदीफ दूनू रहत। जँ एहन शब्द आबए तँ ओ एकै सङ्ग काफिया आ रदीफ लेल प्रयोग भए सकैए। जेना कि विजय नाथ झा जीक लिखल एकटा गजलक उदाहरण देखू--

हमर नाम परिचय पता लापता सन
बनल भार बहिया नियम व्रत प्रथा सन

केहन की नियोगी वियोगक बहुलता
रथी सारथी पथ पतन रति यथा सन

बहल संग लागल कठिन कहि तपस्या
बनू जड़ सुखक लेल करिऔ शिवासन

आब जँ अहाँ ऐ गजलक मतलाकेँ देखबै तँ पता चलत जे रदीफ “सन “अछि आ काफिया “आ “केर मात्रा अछि। आब एही गजलक तेसर शेरक दोसर पाँति देखू अंतमे शब्द छै “शिवासन “, ऐ शब्दकेँ अंतसँ देखलापर पता लागत जे अन्तिम भाग “सन “छै आ ताहिसँ पहिने “व” अक्षरमे “आ “केर मात्रा छै आ ई शब्द एकै सङ्ग काफिया आ रदीफक शर्त पूरा करैए तँए ई ठीक अछि आ गजलमे ई मान्य अछि। ऐ प्रकारक रदीफकेँ “तहलीली रदीफ” कहल जाइत छै। किछु लोकक हिसाबसँ ई दोष भेल, मुदा अधिकांश शाइर एहन काफिया प्रयोग करै छथि।।

3) **काफिया**--काफिया मने स्वर साम्य युक्त तुकान्त चाहे ओ अक्षरक स्वरसाम्य हो की मात्राक स्वरसाम्य। रदीफसँ पहिने जे स्वर साम्य युक्त तुकान्त होइत छैक तकरा काफिया कहल जाइत छैक। आ ई रदीफे जकाँ गजलक हरेक शेरक (मतला बला शेरकेँ छोड़ि) दोसर पाँतिमे रदीफसँ पहिने अनिवार्य रुपें अएबाक चाही (जँ रदीफ छै गजलमे तँ नै तँ काफिया खाली)। काफिया दू प्रकारक होइत छैक (क) अक्षरक स्वरसाम्य आ (ख) मात्राक स्वरसाम्य। अक्षरक काफिया लेल शेरक हरेक पाँतिमे रदीफसँ पहिने समान अक्षर आ तकरासँ पहिने समान स्वरसाम्य होएबाक चाही। काफियाक निर्धारण काफिया लेल प्रयुक्त शब्दकेँ अन्तसँ बीच वा शुरू धरि कएल जा सकैए। उदाहरण देखू--

करेज घसैसँ साजक राग निखरै छै
बिना धुनने तुरक नै ताग निखरै छै

एहि शेरक पहिल पाँतिमे रदीफ “निखरै छै” छैक। आ रदीफसँ ठीक पहिने “राग” शब्द छैक। जँ अहाँ “राग” शब्द पर धेआन देबै तँ पता लागत जे ऐ शब्दक अन्तिम अक्षर “ग” छैक मुदा ऐ “ग” संग “आ” ध्वनि (रा) सेहो छैक। तहिना दोसर पाँतिमे रदीफ “ निखरै छै “सँ पहिने “ताग” शब्द अछि। आब फेर अहाँ सभ “ताग” शब्दकेँ देखू। ऐमे अन्तिम अक्षर “ग” तँ छैके संगहि-संग “आ” ध्वनि (ता) सेहो

छैक। मतलब जे उपरक शेरक दुनू पाँतिमे रदीफ “निखरै छै”सँ पहिने “ग” अक्षर अछि, “आ” स्वर (ध्वनि)क संग। अर्थात “आ” ध्वनि संगे “ग” अक्षर ऐ शेरक काफिया भेल। आब ऐठाम ई मोन राखू जे जँ उपरक ई दूनू शेर कोनो गजलक मतला छैक तँ ओइ गजलक हरेक शेरक कफिया “ग” अक्षरक संग “आ” ध्वनि होएबाक चाही। अन्यथा ओ गजल गलत भए जाएत। आब ऐ गजलक दोसर शेरकेँ देखू--

इ दुनिया मेहनतिक गुलाम छै सदिखन
बहै घाम तखन सुतल भाग निखरै छै

ऐ शेरमे पहिल पाँतिमे ने रदीफ छैक आ ने काफिया मुदा दोसर पाँतिमे रदीफ सेहो छैक आ रदीफसँ पहिने शब्द “भाग” अछि। ऐ शब्दक अंतमे “ग” अक्षर तँ छैके संगहि-संग “ग”सँ पहिने “आ” ध्वनि सेहो छैक। ऐ गजलक आन काफिया सभ अछि “लाग”, “बाग”, “पाग” । काफियाक ऐ विवरणकेँ एना बूझी तँ नीक रहत—

1) जँ कोनो मतलामे “छन” आ “दन” काफिया छै तँ ऐमे “न” अक्षर मूल अक्षर भेलै (काफियाक मिलान सदिखन अन्तसँ कएल जाइत छै) आ ओइसँ पहिलुक अक्षरक स्वर सेहो बराबर हेबाक चाही। उपरका उदाहरणमे “न” अक्षरक बाद क्रमशः “छ” आ “द” अक्षर बचै छै आ दुनूक स्वर “अ” छै मने अकारान्त छै तँए कोनो मतलामे ई काफिया सही हएत। आब ऐ गजलमे आन शेर सभमे एहने काफिया हेतै जेना “हन”, “मन”, “जीबन” आदि। ऐठाम ई बात बुझबाक अछि जे जँ मतलामे “छन” आ “धुन” रहितै तँ काफिया गलत भऽ जेतै कारण मूल अक्षर “न” केर बादक स्वरक मात्रा सेहो अनिवार्य रूपें मिलबाक चाही मुदा ऐ उदाहरणक एकटा काफियामे “न” केर बाद “अ” स्वरक गुणिताक्षर छै तँ दोसरमे मूल अक्षर “न” केर बाद “उ” स्वर छै, तँए ई गलत भेल। ऐठाम ईहो मोन राखू जे “छन” आ “दन” केर बाद कोनो आन शेरमे “धुन”, “आन”, “निन” आदि काफियाकेँ नै लऽ सकैत छी। ईहो मोन राखू जे एकै गजलक आन-आन शेरमे मूल अक्षर एकै

रहतै। जेना उपरका उदाहरणमे “छन” आ “दन” काफिया छै तँ आन शेरक काफियाक अंतमे “न” अक्षर अनिवार्य रूपसँ रहतै।

2) जँ कोनो मतलामे “जीवन” आ “तीमन” छै तँ काफिया “अ” स्वरक संग “न” मूल अक्षर हएत। आ तँए आन शेरक काफिया लेल “धूमन”, “केहन”, “पावन” एहन शब्द सेहो काफिया भऽ सकैए।

3) जँ कोनो मतलामे काफिया “तीमन” आ “नीमन” शब्द छै तखन कने धेआन राखए पड़त। दुनू शब्दकेँ धेआनसँ देखू, अंतमे “मन” अक्षर समूह उभयनिष्ठ छै तँ एहन काफियामे “मन” मूल अक्षर समूह भेल आ तइसँ पहिने दुनूमे “ई” स्वरक मात्रा छै (ती, नी) तँए एकर काफिया भेल “ई” स्वरक मात्राक संग “मन” अक्षरक समूह। जँ कोनो शाइर “तीमन” आ “नीमन” केर बाद कोनो आन शेरमे “जीबन”, “धूमन”, “केहन”, “पावन” काफिया लेताह तँ गलत हएत। सही काफिया हेत “परिसीमन” आदि। ऐठाम ईहो मोन राखू जे जँ कोनो मतलामे “तीमन” आ “धूमन” काफिया छै तँ ओ गलत हएत कारण “मन” अक्षर समूहसँ पहिने एकटामे “ई” स्वरक मात्रा छै तँ दोसरमे “उ” स्वरक मात्रा। तेनाहिते “खाएत” एवं “आएत” काफियामे अन्तसँ “एत” उभयनिष्ठ छै एवं तइसँ पहिने “आ” स्वरक मात्रा छै, तकर बाद आन शेरमे “जाएत”, “नहाएत”, “पाएत”, “बुड़िआएत” आदि काफिया सही हेतै। जँ कोनो गजल बिना रदीफक अछि तैयो ई नियम सभ लागत (पहिने हमरा बिना रदीफ बला गजलक काफियापर किछु भ्रम छल मुदा आब ई फाइनल अछि संगे-संग हमर भ्रमक कारणे जे गलत गजल लिखाएल ताहि लेल हमहीं टा उत्तरदायी छी। भूमिकामे काफियक जे गलती कहल गेल छल ताहिमेसँ एकटा ई अछि)

4) कोनो मतलामे “खौंझाएत” आ “बुझाएत” शब्दक काफिया नै भए सकैए से आब अहाँ सभ नीक जकाँ बुझि गेल हेबै। जँ कोनो शाइर एहन काफिया लै छथि तँ काफियामे “सिनाद दोष” आबि जाइत छै।

5) केखनो काल किछु एहन शब्द आबि जाइत छै काफियामे, जे अधिकांशतः एक समान रहैत छै जेना “पसार” एवं “सार” । ऐ दूटा शब्दमे अन्तसँ खाली “सार” उभयनिष्ठ छै आ स्वरक मिलान नै भए रहल छै तँए कोनो मतलामे “पसार “आ “सार “काफिया नै बनि सकैए। तेनाहिते विचारक संग “चार” आदि काफिया नै लऽ सकैत छी। “धार” आ “उधार “सहित एहन आन-आन शब्द लेल एहने सन बूझू। जँ कोनो गजल बिना रदीफक अछि तैयो ई नियम सभ लागत (पहिने हमरा बिना रदीफ बला गजलक काफियापर किछु भ्रम छल मुदा आब ई फाइनल अछि संगे-संग हमर भ्रमक कारणे जे गलत गजल लिखाएल ताहि लेल हमहीं टा उत्तरदायी छी। भूमिकामे काफियक जे गलती कहल गेल छल ताहिमेसँ दोसर ई अछि)

आब कने संयुक्ताक्षर बला काफियाकेँ देखी। किछु आर विवरणसँ पहिने किछु संयुक्त शब्द सभकेँ देखल जाए। प्रस्थान, चुस्त, दुरुस्त, किस्मत। आब ई देखू जे संयुक्त अक्षर अन्तसँ कोन स्थानपर पड़ैत अछि। जँ ई अन्तसँ तेसर आ ओकर बाद मने चारिम या पाँचम स्थानपर अबैत हो तँ काफियाक नियम पहिने जकाँ हएत। मुदा जँ इएह संयुक्त अक्षर काफिया बला शब्दक अंतसँ दोसर स्थान पर अबैत हो तँ कने धेआन देबए पड़त। मानि लिअ जे मतलाक पहिल पाँतिमे “मस्त” काफिया छैक। तँ आब हरेक काफियाक अंतमे “्+त” हेबाक चाही जेना तप्त, सप्त आदि रहबाक चाही। उदाहरण लेल “मस्त” केर काफिया “दस्त”, “पस्त”, “हरस्त”, “तप्त”, “सप्त” आदि भऽ सकैए। उपर हम धेआन देबाक लेल हम एहि दुआरे कहलहुँ जे हलंत लागल अक्षरक उच्चारण अलग भऽ जाइत छै। उर्दूमे तँ संयुक्ताक्षर बला शब्दमे बदलाव नै भऽ सकैए जेना उर्दूमे मस्त केर काफिया पस्त हेतै तप्त नै मुदा हम मैथिलीक प्रकृतिक अनुरूप एकरा विस्तार केलहुँ। मुदा जखन हम मतलामे "मस्त" केर काफिया "पस्त" लेबै तखन बाध्यता भऽ जाएत जे हरेक शेरक काफिया "स्त" हो। उदाहरण रूपमे एकटा शेरकेँ देखल जाए--

हेतै कोना कऽ गुदस्त जीबन
भेलै चिन्तासँ हरस्त जीबन

आब ऐ शेरमे रदीफ “जीबन” भेल आ पहिल पाँतिमे काफिया “गुदस्त” अछि, आब संयुक्ताक्षर बला नियमक हिसाबें काफिया बला शब्दमे अन्तसँ दोसर अक्षर “स्त” होएबाक चाही। आब दोसर पाँतिके देखू रदीफसँ पहिने काफियाक रूपमे “हरस्त” अछि जकर अंतसँ “स्त” संगे-संग “अ” अक्षरक स्वरसाम्य सेहो छै जे नियमक मोताबिक सही अछि। ऐ गजलमे आन काफिया सभ एना अछि “व्यस्त”, “मदमस्त”, “मस्त”, “सस्त” आदि। उपरके नियम जकाँ मतलाक पहिल पाँतिमे जँ “मस्त” काफिया छै तँ ओकर बाद आन शेरमे “चुस्त” “सुस्त” आदि काफिया नै आबि सकैए। संयुक्ताक्षरक ई नियम मात्रा बला काफिया लेल कने अलग ढ़ंगसँ छैक। किछु विस्तृत विवरण मात्रा बला खण्डमे भेटत। पंचमाक्षरक कारण बनल संयुक्ताक्षर लेल ई नियम काज नै करत आ एकर विवरण आगू भेटत।

खण्ड-3

(विभक्ति बला काफिया)
मैथिलीमे विभक्ति सटा कऽ लीखब उचित मुदा बहुत रास हिंदीसँ प्रभावित लेखक विभक्ति हटा कऽ लीखै छथि। हम गद्य आ पद्य दूनूमे विभक्ति सटा कऽ लीखै छी। गजलमे विभक्ति बला काफियाक कोना निर्वाह हो से देखू--
1) कोनो मतलामे “कलमसँ “आ “पतनसँ “काफिया बनि सकैए मुदा मतलामे “कलम सँ “आ “पतन सँ “काफिया नै बनि सकैए। तेनाहिते “आँखिसँ” आ चाँकिसँ “काफिया सेहो ठीक रहत मुदा “आँखि सँ” आ चाँकि सँ “नै (मूल पोथीक दूनू उदाहरणमे विभक्ति सटि गेल छल, एतए सही अछि)।

2)एहन मूल शब्द जकर अंतमे मात्रा होइक ओकर काफिया लेल धेआन राखू जे विभक्ति के बाद ठीक वएह मात्रा स्वरसाम्यक संग एबाक चाही। उदारहरण लेल--

आँखिसँ, चाँकिसँ, बाँहिसँ, इत्यादि
रातिमे, जातिमे, जाठिमे, इत्यादि
घुटठीकेँ, गुड्डीकेँ, चुट्टीकेँ, इत्यादि
पानिक, आनिक, इत्यादि

केखनो काल दूटा विभक्ति एकै संग जुटि जाइत छैक एहन समयमे अहाँकेँ दोसरो काफिया ओहने लेबए पड़त जाहिमे दूनू विभक्त समान होइक स्वरसाम्यक संगे।विभक्ति बला काफियाक संबंधमे एकटा आर खास गप्प। कोनो एहन मूल शब्द जकर अंत कोनो एकटा खास विभक्तिसँ साम्य रखैत हो, विभक्तिसँ पहिने बला अक्षर अकारान्त वा मात्रा युक्त (जेहन स्थिति) हो संगहि-संग ओहिसँ पहिने स्वरसाम्य हो तँ ओ दूनू काफियाक रूपमे लेल जा सकैए। उदाहरण लेल एकटा विभक्ति बला शब्द “पातक” वा “बाटक” लिअ। आ आब एहन मूल शब्द ताकू जकर अंतमे “क” होइ, “क”सँ पहिने अकारान्त अक्षर होइक (जँ अकारान्त अक्षरसँ पहिने स्वरसाम्य होइ तँ आरो नीक) तँ

ओ दूनू (एकटा विभक्ति युक्त आ दोसर मूल) शब्द काफिया भए सकैत अछि। उदाहरण लेल उपर लेल दूनू विभक्त युक्त शब्द “पातक” आ “बाटक” के मूल शब्द “बालक” पालक” वा “चालक”सँ मिलाउ। जँ गौरसँ देखबै तँ पता लागत जे ई शब्द सभ काफिया लेल एकदम्म उपयुक्त अछि। तेनाहिते मात्रा बला शब्द जाहिमे विभक्ति सटल हो आ ओहन मूल शब्द जे ओकरासँ मिलैत हो एक-दोसराक काफिया बनि सकैत अछि। आब कने ऐठाँ ई विचारि ली जे जँ कोनो शेरक अंतिम शब्द सभमे विभक्ति सटल छै तँ कोन रदीफ हेतै आ कोन रदीफ नै हेतै। जेना की शुरूमे रदीफ प्रकरणमे विजय नाथ झा जीक गजलक (तहलीली रदीफ) उदाहरण देने छलहुँ तकरा मोन पाड़ू (हलाँकि विजय नाथ झा जी बला शब्द सन्धिक कारणें अछि मुदा ऐठाम विभक्ति सटबाक कारणें)। तकरा बाद ई देखू जे विभक्ति हटेलाक बाद काफिया बनै छै की नै। जँ विभक्ति हटेला बाद काफिया बनि रहल छै तखन ओकरा रदीफ युक्त शेर वा गजल मानू। आ जँ विभक्ति हटेलाक बाद काफिया नै बनि रहल छै तखन ओकरा बिना रदीफक शेर वा गजल मानू। उदाहरण लेल—

पसरल छै शोणित सगरो बाटपर
घर आँगन बाड़ी झाड़ी घाटपर

एहि गजलक आन अन्तिम शब्द अछि “हाटपर”, “खाटपर”, “टाटपर” । देखू एहि सभमे अंतसँ विभक्ति “पर “सेहो छै एवं विभक्ति हटेलाक बादो “आ “स्वरक संग “ट “अक्षरक काफिया बनि रहल छै । तँए एकरा रदीफ युक्त शेर मानल जाएत।मुदा जँ कोनो शेरक पहिल पाँतिमे “कलमसँ” आ दोसर पाँतिमे “पतनसँ” काफिया लेल गेल छै तखन ई बिना रदीफक गजल मानल जाएत कारण विभक्ति हटेलाक बाद “कलम “आ “पतन” एक दोसराक काफिया नै बनैए।

३) आब ई देखू जे जँ विभक्ति बला शब्द पाँतिक बीचमे एतै तँ ओकर की व्यवस्था हेबाक चाही आ ऐ लेल एकटा उदाहरण देखू--

हमरा संगमे आम छै
हमरा हाथमे आम छै

ऐ शेरकेँ नीकसँ देखबै तँ पता लागत जे “मे आम छै” दूनू पाँतिमे उभय (कामन) छै तँए ई रदीफ भेल मुदा ऐ ठाम हमरा सभकेँ ऐ नियमक मैथिलीकरण करऽ पड़त। आ ई नियम मनमाना नै बल्कि भाषायी मजबूरी अछि (उर्दूमे सहो एहने समझौता करए पड़ल छै तकर विवरण आगू भेटत)। तँए ऐ शेरमे “संगमे” आ “हाथमे” काफिया भेल आ “आम छै” रदीफ। एहन नियम मात्र विभक्तिए बलामे आबि सकैए। एक तरहें एकरा नियममे छूट वा ढ़िलाइ सेहो बुझि सकै छिऐ।
ऐठाम दू टा गप्प बेसी जरूरी जेना कि उपरे कहने छी विभक्ति सटेनाइ मैथिलीक मूल थिक तँए सभ विधामे विभक्ति सटाउ, एहन नै जे खाली गजलक काफियामे छूट लेबाक हिसाबें विभक्ति सटा देलहुँ आ आन विधामे हटा देलहुँ आ दोसर गप्प जे ई छूट वा ढ़िलाइ मात्र विभक्तिए बला अक्षर लेल अछि। मैथिली बहुत संभावना भरल भाषा छै आ ऐमे काफियाक ढ़ेरी लागल अछि तँए एहन दुविधा बला शेर कम्मे हेबाक चाही। ओना ई संभावना बेसी अछि जे भविष्यमे ऐ नियमक दुरुपयोग होबए लागत।

विशेष टिप्पणी-- उच्चारणमे केखनो काल “कर्म कारक” क चिन्ह “केँ” आ “सम्बन्ध कारक” चिन्ह “के” दूनूक अंतर खत्म भऽ जाइत छै। मुदा लिखित रूपमे मानकताक लेल ई अंतर राखल गेल छै। संगहि-संग ईहो स्पष्ट करब जरूरी जे “सँ” विभक्तिकेँ लघुमे सटा कऽ लिखलापर एकटा दीर्घ सेहो मानि सकै छी आ दू टा लघु सेहो। जेना “रामसँ” एकरा 22 सेहो मानि सकै छी आ 211 सेहो।
बहुत आदमी नासिकताक कारणे “जँ”, “सँ”, “तँ” आदिक रेघेनाइकेँ दीर्घ मानै छथि मुदा ई गलत अछि। जँ रेघेनाइए टा कसौटी छै तखन तँ

कोनो शब्द दीर्घ भऽ सकै छी- कियो “स” केर उच्चारण सेहो रेघा कऽ कहता जे ई दीर्घ छै। एहन बहुत उदाहरण भेटि जाएत। तँइ हम ऐ प्रकारक बहसकेँ वितंडा बूझै छी। सोझ रूपें बुझू जे लघु अक्षर उपर जँ चंद्रबिंदु छै तँ लघुए रहत।

आब कने मात्रा बला काफिया पर विचार करी। मतलामे रदीफसँ पहिने जँ अक्षरमे कोनो मात्रा छैक। तँ गजलक हरेक शेरक काफिया मे वएह मात्रा अएबाक चाही चाहे ओहि मात्राक संग बला अक्षर दोसरे किएक ने हो।

पूब मे उगल ललका थारी तऽ देखू
दूइभक घर चमा चम मोती तऽ देखू
(अमित मिश्र)

ऐ गजलमे लेल गेल आन काफिया सभ अछि--किलकारी, बेमारी, पारी, साड़ी आ तरकारी। ऐठाम ई धेआन देबए बला बात अछि जे मतलामे जे काफिया प्रयोग भेल छै तकर अंतमे “ई “केर मात्रा छै अक्षर मुदा अलग-अलग छै मुदा ओहिसँ पहिने बला स्वर नै मीलि रहल छै एकर मतलब ई भेल जे मात्रा बला काफिया लेल शब्दक अंतमे जे मात्रा छै सएह आन शब्दक अंतमे अएबाक चाही बशर्ते की अक्षर अलग-अलग हो । आब ऐठाम ई देखू जे जँ मतलामे “थारी “क संग साड़ी रहितै तखन आन काफियामे “ड़ी” वा “री” कामन रहितै आ ताहिसँ पहिने “आ” केर स्वरसाम्य रहितै। जेना “बाड़ी “, उधारी, अधकपारी इत्यादि। जँ “थारी “आ “बाड़ी” केर बाद “मोती “शब्दक काफिया लै छी तँ सिनाद दोष आबि जाएत आ काफिया गलत भए जाएत। तेनाहिते जँ कोनो मतलामे “मोती “आ कोठी” काफिया लेबै तखन साड़ी, उधारी आदि काफिया भए सकैए। कोना से आब अहाँ सभ नीक जकाँ बुझि गेल हेबै। एखन हमरा लोकनि “ई “मात्राक उदाहरण देखलहुँ। ऐठाम ई मोन राखू जे “दीर्घ इ “मने “ई “अपन शुद्ध रूपमे सेहो आबि सकैए शुद्ध रूप मने अक्षरक रूपमे जेना की

जे गलत छै ओ सही छै
हुनक गप्पे सन तँ ई छै

आब ऐ शेरकेँ देखू जे ऐमे “छै” रदीफ भेल आ पहिल पाँतिमे काफिया “ह” अक्षरपर “ई” केर मात्रा अछि मुदा दोसर पाँतिमे “ई” अपन अक्षरक रूपमे अछि मने शुद्ध रूपमे अछि। शाइर एनाहुतो काफिया बना सकैत छथि। ई नियम पूर्णतः उच्चारण सम्मत छै। मुदा ऐठाँ ई मोन राखू जे एहन सुविधा “ह्रस्व इ “लेल नै अछि। मने “ह्रस्व इ “अपन अक्षरक रूपमे काफिया नै बनि सकैए। जाहि-जाहि अक्षरक शुद्ध रूप काफिया बनि सकैए तकर अक्षरन ओही मात्राक उदाहरणक सङ्ग देल जा रहल अछि।
ऐ नियम सभहँक अधार पर हमर प्रकाशित पोथी “अनचिन्हार आखर “केर बहुत रास काफिया गलत अछि। मुदा ओहि समय हमरा लग काफिया जतेक समझ छल ओहि हिसाबसँ ओकर प्रयोग कएल। आ तँए ओहि पोथी महँक किछु काफियाक नियम आब पूर्णतः बेकार भए चुकल अछि। संगे संग ईहो धेआन राखू जे आन मात्रा बला कफिया लेल एहने नियम रहत।
एकटा गलत उदाहरण देबासँ हम अपनाकेँ रोकि नै रहल छी। ई शेर हमरे थिक--

एनाइ जँ अहाँक सूनी हम
नहुँएसँ सपना बूनी हम”

(काफिया “ई” क मात्रा)
एहि गजलक अन्य काफिया अछि “चूमी”, “पूछी”, “बूझी”, “खूनी”,,” लूटी”, “सूती” आदि। आब ऐ शेरमे देखू दूनू पाँतिक काफियामे “नी “छै आ ताहि हिसाबसँ हमरा हमरा एहन काफिया चुनबाक छल जकर अंतमे “नी “अबैत हो आ ताहिसँ पहिने “ऊ “केर मात्रा हो। ऐ शेरमे “ऊ “केर मात्रा तँ लेल गेल अछि मुदा “नी “केर

पालन नै भेल अछि तँए ऐ गजल महँक एकटा काफिया “खूनी “छोड़ि आन सभ (जेना चूमी”, “पूछी”, “बूझी ““लूटी”, “सूती”) आदि गलत अछि। अन्य बचल मात्राक लेल एहने समान नियम अछि आ हरेक मात्राक एक-एकटा उदाहरण देल जा रहल अछि। (ऐ ठाम ई मोन राखू जे उर्दूक किछु घराना ऐ नियमकेँ तोड़बाक ओकालति करै छथि। हुनक कहब छन्हि जे अंतमे मात्रा आबि रहल छै अक्षरक कोन काज। मुदा हमरा हिसाबें मूल नियम ठीक अछि।)

1) छोड़ि कऽ जे बिनु बजने जा रहल अछि
हृदै चिरैत आगि सुनगा रहल अछि

(काफिया “आ” केर मात्रा)
(गजेन्द्र ठाकुर)
ऐ गजल आन काफिया सभ अछि--कना, भसिया, जा, खा इत्यादि।
मैथिलीमे “आ” अक्षर केर शुद्ध रूपमे काफिया बनि सकैए।

2) “जँ तोड़ब सप्पत तँ जानू अहाँ
फाँसिए लगा मरब मानू अहाँ”

(काफिया “ऊ” क मात्रा)
(आशीष अनचिन्हार, सरल वार्णिक)
एहि गजलमे लेल गेल अन्य कफिया “गानू”, “आनू”, “टानू” आदि।
मैथिलीमे “ऊ “अक्षर केर शुद्ध रूपमे काफिया बनि सकैए।

3) “मोन तंग करबे करतै
देह भाषा पढबे करतै”

(काफिया “ए” क मात्रा)
एहि गजलमे लेल गेल अन्य कफिया “खुजबे”, “उड़बे”, “सटबे” आदि अछि।

“ए” अक्षर केर शुद्ध रूपमे काफिया बनि तँ सकैए मुदा ओतेक प्रभावी नै हएत कारण मैथिलीमे शब्दक अंत बला “ए” केर उच्चारण अपूर्ण होत छै। मोन राखू मात्रा बला उच्चारण पूरा होइत छै।

4) भोरे उठि मैदान गेलै बौआ
ओम्हरहिसँ दतमनि तँ लेतै बौआ

(आशीष अनचिन्हार)
(काफिया “ऐ” क मात्रा)
ऐ गजलक आन काफिया सभ अछि--एतै, जेतै, बनतै, चलतै आदि-आदि।
ऐ केर मात्राक एकटा आर उदाहरण देखू

करबै नै मजूरी माँ पढबै हमहूँ
नै रहबै कतौ पाछू बढबै हमहूँ

(ओमप्रकाश)
ऐ गजलमे लेल गेल आन काफिया अछि--चढ़बै, मढ़बै, गढ़बै आदि-आदि। मैथिलीमे “ऐ “अक्षरक काफिया शुद्ध रूपमे बनि सकैए।
केखनो काल “ऐ” केर उच्चारण “अइ” जकाँ होइत अछि। जेना “सैतान” बदलामे सइतान, बैमानक बदलामे “बइमान” इत्यादि।

5) “आब हरजाइकेँ तों बिसरि जो रे बौआ
मोन ने पड़ौ एहन सप्पत खो रे बौआ

(काफिया “ओ” क मात्रा)
(आशीष अनचिन्हार, सरल वार्णिक)
एहि गजलमे लेल गेल अन्य कफिया--ओ, खसो, पड़ो इत्यादि अछि। मैथिलीमे “ओ “अक्षरक काफिया शुद्ध रूपमे बनि सकैए।

6) “एक बेर फेर हँसिऔ कनेक
ओही नजरिसँ देखिऔ कनेक”

(काफिया “औ” क मात्रा)
(आशीष अनचिन्हार, सरल वार्णिक)
एहि गजलमे लेल गेल अन्य कफिया --” रहिऔ”, “चलिऔ”, “बुझबिऔ” आदि अछि।
मैथिलीमे “औ “अक्षरक काफिया शुद्ध रूपमे बनि सकैए। बशर्ते की जखन “यौ “केर बदलामे “औ” केर प्रयोग हो तखन।
**** केखनो काल “औ” केर उच्चारण “अउ” जकाँ होइत अछि।
ऐठाम ईहो मोन राखू जे जँ कोनो मात्रापर अनुस्वार वा चंद्रबिंदु छै तँ ओकर पालन हेबाक चाही। जेना मतलामे “चुँइयाँ “एवं “घुँइयाँ” केर बाद कोनो शेरमे “बुइया “काफिया नै आबि सकैए । तेनाहिते कोनो मतलामे “चुँइयाँ “एवं “बुइया “काफिया नै बनि सकैए । तेनाहिते “बुइया “एवं “रूइया “(मतलामे) केर बाद “चुँइयाँ “काफिया नै आबि सकैए।

खण्ड-4

(संयुक्ताक्षर बला काफिया)
आब हमरा लोकनि फेरसँ एकबेर संयुक्ताक्षर बला शब्दपर चली। मात्रा बला संयुक्ताक्षर लेल पहिनेसँ कने अलग ढ़गसँ देखू। ई गप्प उदाहरणसँ बेसी फड़िच्छ हएत। मानू जे मतलाक पहिल पाँतिमे काफियाक रूपमे “चुट्टी” शब्द लेल गेल। आब दोसर काफिया लेल मोन राखू जे “ई” मात्रा युक्त कोनो शब्द भए सकैत अछि। उदाहरण लेल “चिन्नी”, “बुच्ची”, “खटनी “आदि “चुट्टी” क काफिया भए सकैत अछि। मुदा जँ मतलाक काफिया “मुट्ठी” आ “घुट्ठी” छैक तखन आन शेरक काफिया “चिन्नी” या “बुच्ची” नहि भए सकैत अछि। कारण तँ अहाँ सभ बुझिए गेल हेबै। उम्मेद अछि जे उपर देल गेल मात्रा बला उदाहरणसँ काफिया संबंधी नियम बेसी फड़िच्छ भेल हएत। आब चली “इ”, “उ” आ रेफ पर। जेना की पहिने लीखि चुकल छी जे मैथिलीमे “इ “केर उच्चारण दू तरहें होइत अछि तथापि एकरा एक बेर आर देखू” एकटा आर गप्प मैथिलीमे एहन शब्द जे “इकारान्त” अछि ओकर उच्चारण दू तरहें होइत अछि मने पहिल भेल जे लिखलो पहिने जाइए आ बाजलो पहिने जाइए जेना की लिखै तँ छी “माटि” मुदा बाजै छी “माइट”, लिखै छी “देखि” मुदा बाजै छी “देइख” एकर आन-आन सभ उदाहरण सभ सेहो अछि। तेनाहिते दोसर भेल लिखै छी पहिने आ बाजै छी बादमे जेना “माटि “, “देखि “इत्यादि । आब आउ “इ“ केर मात्रा युक्त काफियापर। आब ऐठाँ अहाँ सभ ई प्रश्न करब जे जँ उच्चारण शैली दू तरहें छै तँ की नियम सेहो दूटा रहतै? मुदा हमर उत्तर हएत जे नै नियम एकैटा रहतै। तँ देखू जे “इ “केर काफिया केना हएत--
जँ अहाँ कोनो एहन शब्दक काफिया बना रहल छी। जकर अन्तिम अक्षर “इ” कार युक्त अछि तँ अहाँकेँ आन-आन काफिया लेल “इ” कार युक्त वएह अक्षर लेबए पड़त जे पहिल काफियामे अछि। उदाहरण लेल जँ अहाँ पहिल पाँतिमे “राति” शब्द काफिया लेल लेलहुँ तँ आब अहाँकेँ दोसर पाँति आ आन-आन शेरक काफिया लेल “त” अक्षर “इ” कार युक्त हेबाक चाही। जेना की “नाति”, “जाति”,

आदि। आ हमरा जनैत एहीठाम मैथिली गजल उर्दू गजलसँ पूर्णतः अलग भए जाइत अछि। आ संगहि-संग इ विशेषता मैथिली गजलके एकटा अपन अलग छवि बनबैत अछि। आ ई विशेषता ह्रस्व “उ” बलामे सेहो अबैत अछि। ई नियम “इ “केर दोसरो उच्चारण शैली लेल उपयुक्त अछि। जेना की खास कए तत्सम शब्दमे इकार बादमे उच्चारणक कएल जाइत अछि जेना “मति “, “गति “इत्यादि आब जँ अहाँ “गति “केर काफिया “हथि “बनेबै तँ केहन प्रभाव हेतै से अहाँ अपने बुझि सकै छिऐ।

ह्रस्व “उ" केर काफिया

आब कने ह्रस्व “उ” पर धेआन दी। मैथिलीमे जँ शब्दक अन्तमे “उ” अबैत हो आ ठीक ओहिसँ पहिने अकारान्त अक्षर हो तखन “उ” केर उच्चारण प्रायः औ/अउ जकाँ होइत अछि सङ्गे-सङ्ग संस्कृतक पण्डित सभ “मधु “केर मूल उच्चारण मने “मधु “सेहो करैत छथि। उदाहरण लेल मधु शब्दक उच्चारण मौध/मअउध होइत अछि। “उ “के काफिया लेल “इ “जकाँ नियम मानू जेना मधु लेल वधु काफिया तँ सही रहल मुदा महु नै। आ जँ “उ”सँ पहिने आकारान्त अक्षर हो तखन “इ” ए जकाँ “उ” केर उच्चारण पहिने होइत अछि। उदाहरण लेल “साधु” केर उच्चारण “साउध”, “बालु” केर उच्चारण “बाउल” इत्यादि। ओना उच्चारण लेल आनो शब्द लेल जा सकैए। आब आबी ओहन शब्दपर जकर अंत “उ” होइक आ ठीक ओहिसँ पहिने आकारान्त अक्षर होइक (जेना की उपरमे एकर उच्चारण पद्धित देखा देल गेल अछि, तँए सोझें काफिया पर चली)। ठीक ह्रस्व “इ” जकाँ नियम छैक एकरो। मानि लिअ जँ अहाँ “बालु” शब्द लेलहुँ, तँ मोन राखू दोसर काफियाक उच्चारण “आकारान्त कोनो अक्षर + उ + ल” होइक जेना की “भालु” इत्यादि। कुल मिला कए कहबाक ई मतलब जे “उ “केर दुनू स्वरूपमे (अकारान्त आ आकारान्त)मे “इ “समान नियम लागू हएत। मैथिलीमे बहुत काल “उ” आ चन्द्रबिंदु एकै संग अबैत अछि। जेना “कहलहुँ”,” सुनलहुँ”, “रहलहुँ” आदि। मानि लिअ जँ ई शब्द सभ जँ काफियाक रूपमे आबि रहल अछि तँ एहन समयमे धेआन राखू जे काफियामे

ठीक वहए अक्षर “उ” आ चन्द्रबिंदुक संग आबए। से नहि भेला पर काफिया गलत भए जाएत। उपरमे देल तीनू शब्दके देखू । तीनू शब्दक अन्त “ह”सँ अछि ओहो “उ” आ चन्द्रबिंदुक संग। मने ई तीनू काफिया लेल उपयुक्त अछि।

रेफ केर काफिया

आब कने “रेफ” बला काफिया पर बिचार करी। रेफ “र” अक्षरक एकटा रूप अछि।जे “र्” मने आधा “र्” मानल जाइत अछि। मैथिलीमे रेफ आ ओकर पूर्ण रूप (र अक्षर) दूनू चलैत अछि । जेना
मर्द - मरद
बर्खा- बरखा
बर्ख- बरख
चर्चा- चरचा
उपरका चारिटा शब्द देखलासँ ई बुझाइत अछि जे रेफक पूर्ण रूप आ रेफ बला शब्दक उच्चारणमे कनेक अंतर भए जाइत छै। संगे-संग किछुए शब्द अपन रेफकेँ छोड़ि पूर्ण र केर स्वरूपमे अबैत अछि। तँए काफियाक संबंधमे हमर ई विचार अछि जे जँ शब्द रेफ युक्त हो मुदा बिना मात्राक हो तँ समान स्वर आ उच्चारणक प्रयोग करी। जेना मानि लिअ अहाँ मतलामे “सर्द “आ “पर्द” काफिया लेलहुँ आ तकरा बादक शेरमे “मरद” काफियाक प्रयोग हमरा हिसाबें गलत हएत कारण स्पष्ट रूपेँ “गर्द “आ “पर्द “शब्दक उच्चारण “मरद “शब्दसँ अलग अछि। तेनाहिते मतलामे “सर्द “आ “मरद” शब्दक काफिया गलत हएत। “मरद “शब्दक बाद “बड़द “, “शरद”, “दरद” आदि काफिया ठीक रहत। मुदा जँ कोनो एहन शब्द जकर अन्तमे रेफ हो आ संगे-संग ओ शब्द मात्रा बला हो तँ नियम बदलि जेतै। मतलब जे शाइर तखन बिना कोनो दिक्कतकेँ काफिया बना सकैत छथि। कहबाक मतलब जे जँ अहाँ मतलाक पहिल पाँतिमे काफिया “गर्दा” लेलहुँ आ तकरा बाद आन काफिया बर्खा या बरखा लेलहुँ तँ बिलकुल सही हएत। आब अहाँ सभ बुझि सकैत छिऐ जे कोनो मतलामे “बर्खी “आ “करची “बनि सकैत अछि। स्वरसाम्य, सिनाद दोष आ ईता दोष बला प्रसंग सभ

आने काफिया जकाँ एहूमे लागू हएत। तेनाहिते ई मोन राखू जे जँ रेफ शब्दकेँ अन्त छोड़ि (शुरूमे वा बीचमे कतौ) छैक तँ संस्कृतक शब्दमे तँ रेफे रहत मुदा विदेशज खास कए अरबी-फारसी आ उर्दू बला शब्दमे “र” भए जाइत अछि। जेना की पर्वतकेँ “परवत” लिखब कने गलत सन लगैए मुदा शर्बतकेँ “शरबत” जरूर लीखि सकैत छी। एहिठाम ई मोन राखू पर्वत आ शरबत दूनू एक दोसराक काफिया भए सकैए।
काफियाक सम्बन्धमे महत्वपूर्ण गप्प ई जे संस्कृत परम्परा हिसाबें “स, श आ ष “केर उच्चारण अलग-अलग अछि। तेनाहिते “न “आ “ण “केर उच्चारण अलग अछि। “र” आ” ड़ “केर उच्चारण अलग अछि आ “ॠ” ओ “रि “केर उच्चारण सेहो अलग अछि। मुदा प्राकृत-अप्रभंश भाषामे ई नियम टूटल। ई नियम दूनू स्तर मने लिखित आ उच्चरितपर टूटल। संस्कृतमे लिखल जाइत अछि “गणेश “आ उच्चारणो होइत छै “गणेश “मुदा प्राकृत-अप्रभंशमे लिखल जाइत अछि “गनेस” आ बाजलो जाइत अछि “गनेस “। मुदा आधुनिक भारतीय भाषा (जे की प्राकृत-अप्रभंशसँ तँ निकलल अछि मुदा आब संस्कृतनिष्ठ भऽ चुकल अछि)मे विचित्र प्रचलन आबि गेल अछि। एखन अधिकांश लोक लिखैए “गणेश “मुदा उच्चारण करैए “गनेस “। जँ काफियाक नियमसँ देखी तँ “गणेश “केर काफिया “गनेस “नै भऽ सकैए। एहने गप्प “ष, न, ण, र,ड़ आ ॠ” लेल बूझल जाए। ढ आ ढ़ केर उच्चारण शब्दक पहिल स्थानपर ढ केर प्रयोग होइत छै मने निच्चामे बिंदु नै लागै छै। एकर उच्चारण शुद्ध होइत अछि उदाहरण लेल ढक्कन। शब्दक दोसर, तेसर, चारिम... अंतिम स्थानपर ढ केर निच्चा बिंदु लागै छै आ लोकमे एकर उच्चारण "र्" ओ "ह" मिला क' होइत छै उदाहरण लेल पढ़ाइ शब्दक उच्चारण प+र्+हा+इ होइत छै। शाइर गजलमे काफिया निर्धारण करैत काल एहू बातक धेआन रखता तँ गजल आरो नीक आर फलेक्सिबल हएत आब कने एक बेर काफियामे ईता दोष देखल जाए--
ईता दोष काफियामे बहुत बड़का दोष मानल जाइत छै। ऐपर कने विचार कए ली। एकरा चारि भागमे देखू-
1) ईता दोष मात्र मतलामे होइत छै।

2) जँ मतलाक दूनू काफिया मात्रा युक्त हो, वा प्रत्ययसँ बनल हो वा सन्धि वा उपसर्गसँ बनल शब्द हो तँ दूनू काफियाक मात्रा हटा दिऔ, वा प्रत्यय हटा दिऔ वा सन्धि विच्छेद कए दिऔ। आब ई देखू जे मात्रा, प्रत्यय वा विच्छेदक बाद जे पहिल शब्द बचल शब्द छै से सार्थक छै की निरर्थक। जँ दूनूमेसँ एकौटा निरर्थक अछि तँ चिन्ता करबाक गप्प नै कारण एहन स्थितिमे ईता दोष नै रहत।
3) जँ दूनू शब्द (मात्रा, प्रत्यय हटेलाक बाद वा विच्छेदक बाद) सार्थक छै आ ओहि बचल पहिल सार्थक शब्दक आपसमे तुकान्त बनि रहल छै तखन मात्रा वा प्रत्यय वा सन्धि बला शब्द सेहो काफिया बनत आ ऐमे ईता दोष नै हएत।
4) मुदा जँ दूनू शब्द (मात्रा, प्रत्यय हटेलाक बाद वा विच्छेदक बाद) सार्थक छै आ ओहि बचल पहिल सार्थक शब्दक आपसमे तुकान्त नै बनि रहल छै तखन मात्रा वा प्रत्यय वा सन्धि बला शब्द सेहो काफिया नै बनत आ ऐमे ईता दोष हएत।
आब कने उदाहरणसँ देखी ऐ प्रकरणकेँ मानू जे मतलामे “बिमारी” आ “हरामी” काफिया छै। तँ आब जँ दूनूक मात्रा हटेबै तँ क्रमशः “बिमार “आ “हराम “शब्द बचै छै जे की सार्थक छै। मुदा “बिमार” आ “हराम” एक दोसराक तुकान्त नै बनि सकैए। तँए मतलामे “बिमारी” एवं “हरामी” काफिया नै बनत। उर्दूमे जँ केओ एहन काफिया बनबै छथि तँ ओकरा ईता दोषसँ ग्रस्त मानल जाइत छै। एकटा दोसर उदाहरण लिअ “दोस्ती” आ “दुश्मनी” मतलामे काफिया नै बनि सकैए। कारण वएह मात्रा हटेलाक बाद दोस्त आ दुश्मन शब्द बचै छै जे की दूनू सार्थक छै आ दूनू एक दोसराक तुकान्त नै बनै छै तँए दोस्ती आ दुश्मनी मतलामे काफिया नै बनि सकैए।
मैथिलीमे प्रत्यय बला शब्द संग सेहो एना कएल जा सकैत अछि। प्रत्यय बला शब्दक किछु उदाहरण देखू धान शब्दमे गर प्रत्यय लगेलासँ नव शब्द बनै छै “धनगर” । तेनाहिते मोन शब्दमे गर प्रत्यय लगेलासँ “मनगर “शब्द बनै छै (किछु गोटेँ मोनगर सेहो लिखै छथि)। एनाहिते आन प्रत्ययसँ बहुत रास नव शब्द बनै छै।

आब कने ऐ नव शब्दक काफियापर आउ जँ धनगर शब्दक काफिया मनगर बनेबै तँ ईता दोष नै रहतै। कारण जँ ऐ दूनू नव शब्दमेसँ गर प्रत्यय हटेबै तँ क्रमशः धन आ मन बचै छै आ दूनूमे तुकान्त सेहो बनि रहल छै (ऐठाम ई मोन राखू जे प्रत्यय हटलाक बाद धन शब्द मिलाएल जेतै ने की धान, तेनाहिते मन मिलाएल जेतै ने की मोन)।
आब जँ मतलामे धनगर संगे दुधगर आबै तँ देखू की हेतै। प्रत्यय हटलाक बाद क्रमशः धन आ दुध बचै छै मुदा दूनू एक-दोसराक तुकान्त नै बनि रहल छै तँए धनगर आ दुधगर एक-दोसराक काफिया नै हएत। आन-आन प्रत्यय वा सन्धि वा मात्रा लेल एहने सन बुझल जाए।
आब जँ बिमारी संग उधारी आबै तँ देखू की हेतै। बिमार एवं उधार दूनू शब्द (मात्रा, प्रत्यय हटेलाक बाद वा विच्छेदक बाद) सार्थक छै आ संगे संग दूनू एक दोसरक तुकान्त बनि रहल छै तँए बिमारी आ उधारी सेहो एक दोसरक काफिया बनत आ ऐमे ईता दोष नै रहतै।
आब जँ बिमारी संग जिनगी लेबै तँ देखू की हेतै। बिमार एवं जिनग (मात्रा, प्रत्यय हटेलाक बाद वा विच्छेदक बाद) बिमार शब्द सार्थक छै मुदा जिनग शब्द निरर्थक तँए बिमारी आ जिनगी सेहो एक दोसरक काफिया बनि सकैए।किछु शब्द एहन होइत छै जकरा पर मात्रा रहैत छै तखन अलग मतलब होइत छै आ मात्रा हटलाक बाद दोसर मतलब बनि जाइत छै जेना “कारी” तँ एकर मतलब भेलै रंग कारी। मुदा जँ एकर मात्रा हटा देबै तँ बचतै “कार “जे की गाड़ीक संदर्भमे सार्थक शब्द तँ छै मुदा मतलब दोसर छै। तँए अहूँ काफियामे ईता दोष नै रहत। आन शब्द एनाहिते ताकल जा सकैए। आब केओ कहि सकै छथि जे बिमार आ बिमारी शब्द अलग-अलग छै मुदा हमर कहब जे बिमार आ बिमारी दूनूक अर्थ एक-दोसरामे निहित छै मुदा कारी आ कार शब्दमे से नै छै।तेनाहिते व्याकरणिक भेद बला शब्दमे ईता दोष नै हएत। जेना पहिल काफिया हो संज्ञा आ दोसर काफिया हो विशेषण इत्यादि। अस्तु ई भेल ईता दोष प्रकारण।
हिन्दीमे बहुतों शाइर ईता दोषकेँ नै मानै छथि, मुदा ई मोन राखू जे मैथिली आ हिन्दी अलग-अलग भाषा छै। मैथिलीमे बहुत रास प्रत्यय

गेना गर, आदि अरबी फारसीसँ आएल अछि तँए ईता दोष मैथिलीमे रहत।

खण्ड-5

(आघात बला शब्दक काफिया)
आघात बला शब्दक काफिया लेल हमर गजलक व्याकरण बला पोथी देखू कारण ई प्रसंग नमहर छै जे एहिठाम देब संभव नै मुदा संक्षेपमे एना दऽ रहल छी। आघात मने जाहि अक्षरपर आघात पड़ै छै तकर उच्चारण कने लंबा भऽ जाइत छै जने 'घर' एहि शब्दमे 'घ'पर बेसी जोर छै 'र'पर कम। मैथिलीमे दू अक्षरक शब्द जाहिमे दूनू लघु होइक आ तीन अक्षरक शब्दमे जाहिमे तीनू लघु होइक तेहन शब्दक मात्रा निर्धारण कठिन भऽ जाइत छै तेनाहिते चारि लघुसँ बनल शब्दमे सेहो दिक्कत छै तँइ एहिठाम हम खाली एही तीनूक उदाहरण देब। आन शब्द सभ सभ एही दू केर मिलनसँ बनैत छै--

1) दू लघु अक्षरसँ बनल शब्दक अंतसँ दोसर अक्षरपर आघात रहै छै तँइ एकरा दीर्घ मानू मने “घर” =दीर्घ =2

2) वर्तमान समयमे बहुतो तीन लघु अक्षर बला शब्दपर आघात गायब भऽ गेल अछि। उपर देल शब्द “तखन” केर उच्चारण “त-खन” होइत अछि। तेनाहिते “बि-गड़ि” बाजल जाइत अछि मुदा किछु एहनो शब्द अछि जइमे आघातक कारणे अर्थे बदलि जाइत छै आ तँइ ओकर उच्चारण पहिने जकाँ रहत उदाहरण लेल एकटा शब्द “कमल “लिअ। आब जँ अहाँ एकर उच्चारण क-मल (मने लघु-दीर्घ) करबै ताहिसँ एकटा फूलक अर्थ निकलत मुदा जखन अहाँ एही शब्दकेँ कम-ल (मने दीर्घ-लघु मने “म” पर आघात) करबै तखन एकर अर्थ घटनाइमे हेतै जेना पानि कमल की नै इत्यादि। तँए हमर आग्रह जे पहिने कोनो शब्दकेँ उच्चारणक हिसाबेँ अर्थ देखू जाहिसँ उच्चारण अनर्थ नै हुअए।

३) वर्तमानमे चारि अक्षरक एहन शब्द जइमे सभ लघु हो तइमे आघात खत्म भऽ गेल अछि उदाहरण लेल “भिनसर” एकर उच्चारण छै “भिन+सर एकर मतलब जे “भिनसर” मे जे “सर” छै तकर उच्चारण समान्यतः “सऽर” नै होइत अछि। दोसर शब्द “कबकब” लिअ एकर वर्तमान उच्चारण “कब+कब” अछि।

एक नजरि विसर्ग बला काफियापर सेहो फेरि ली--

विसर्ग कोनो अलग अक्षर नै छै खाली स्वाराश्रित छै। विसर्गक उच्चारण विशिष्ट आ अलग हेबाक कारणें ओकरा सही रूपमे लिखब संभव नै छै। मैथिलीमे शब्दक अंत बला विसर्गक उच्चारण प्रलंबित (रेघाएल) “ह” अक्षर सनक होइत छै जेना “अतः=अतह”, “समान्यतः=समान्यतह” मुदा वास्तविक तौरपर ई “ह” केर असली उच्चारण नै छै से उपर पढ़ि स्पष्ट भऽ जाएत। आब ऐठाम प्रश्न उठि सकैए जे ‘विरह’ आ ‘अत:’ केर उच्चारण “ह” छै तँ की ई दूनू एक दोसराक काफिया बनि सकैए?
सुनलापर ‘विरह’ आ ‘अत:’ऑल्मोस्ट समान बुझाइए मुदा ऐ दूनू शब्दक अन्तमे दृष्टव्य आकृति [देखाए बला] एक नै हेबाक कारणें एकरा उचित / सटीक काफिया नै मानल गेल छै। उपर कहले गेल अछि जे विसर्ग खाली स्वाराश्रित छै। तँए ‘विरह’ आ ‘अत:’ एक दोसराक काफिया नै बनि सकैए।मने “ह” आ “विसर्ग” एक दोसरक काफिया नै बनि सकैए।
3) **मकता**--गजलक ओहि अन्तिम शेरके कहल जाइत छैक जाहिमे शाइर अपन नाम-उपनाम (तख़ल्लुस)के प्रयोग करथि। जेना एकटा उदाहरण देखू--

चिन्हार अनचिन्हारक संग
गरदनि कटैए सपनामे

एहिमे हम अपन उपनाम अनचिन्हार के प्रयोग केने छिऐक आ ई शेर गजलक अन्तिम शेर छैक तँए ई शेर भेल “मकता” । बिना मकताक गजल सेहो होइत छैक। मकताक संबंधमे ई धेआन राखू जे शाइर अपन सभ गजलमे या तँ अपन नामके प्रयोग करथि वा अपन उपनामके। मने दूनूमेसँ कोनो एकैटा। एकर उदाहरण हम अपनेपर लैत छी। हम अपन गजलमे या तँ आशीष के प्रयोग करबै वा अनचिन्हार

के। ई नहि जे किछु गजलमे आशीष आ किछुमे अनचिन्हार। जँ अन्तिम शेरमे नाम-उपनाम नै छै तँ ओकरा मकता नै कहल जाइत छै। ओ आने साधारण शेर भेल। तेनाहिते जँ केओ बीच बला शेरमे नाम-उपनाम देने छथि तँ ओहो मकता नै भेल। बहुत शाइर मकतामे अपन उपनाम उद्धरण चिन्ह लगा कऽ प्रस्तुत करै छथि। ओना ई गलत तँ नै छै मुदा एना केलासँ अर्थसंकोच भऽ जाइत छै। उदहारण लेल मानि लिअ जे हम “अनचिन्हार” लिखबै तँ ई व्यक्तिवाची बनि कऽ एकर अर्थ “आशीष अनचिन्हार” भऽ जेतै मुदा जखन हम सोझे अनचिन्हार लिखबै तँ ई शाइरक उपर सेहो लागू हेतै आ आन अपरिचित लोकक संदर्भमे सेहो। तँए हम अपन उपनाममे उद्धरण चिन्हक प्रयोग नै करै छिऐ। एकटा छोट सन अंतर देखाबए चाहब जे उर्दू-हिंदीमे विभक्ति एक छै तँइ ओइमे उपनामपर कोनो फर्क नै पड़ै छै उदहारण लेल--

नज़र में है हमारी जादा-ए-राह-ए-फ़ना ग़ालिब
कि ये शीराज़ा है आ़लम के अज्जाए-परीशां
(गालिब)

था जी में उससे मिलिए तो क्या क्या न कहिये 'मीर'
पर कुछ कहा गया न ग़म-ए-दिल हया से आज
(मीर तकी मीर)

जब मुझसे मिली फ़िराक वो आँख
हर बार इक बात गढ़ गयी है
(फिराक गोरखपुरी)

कहबाक मतल जे हिंदी उर्दूसँ अलग मैथिलीक संज्ञामे विभक्ति सेहो जुटि जाइत छै उदाहरण लेल--

“राजीवक नाम अमर छै”

“अमरक नाम”

एकरा संगे-संग संज्ञामे आनो परिवर्तन सेहो मकता कहल जेतै। जेना--

“ओमो जेतै”

तँइ हमर स्पष्ट मंतव्य अछि जे विभक्ति जुटल नाम-उपनाम आन परिवर्तन बला नाम-उपनाम मैथिलीमे मकता हएत।

आशा अछि जे अहाँ सभ लघु-दीर्घ प्रकरण बुझि गेल हेबै। तँ आब ई देखी जे गजलक निर्माण कोना हो। ऐ प्रकरणकेँ फरिछेबाक लेल हम जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीसँ आग्रह केने रही तँ ओ एकटा लेखक माध्यमे एना देलाह। ऐ लेखमे ओ अपन एकटा गलत गजल लेलाह आ ओकरा पुनः संशोधित केलाह। गलतकेँ ठीक करबाक प्रकियासँ ई सहजे बुझा जाएत जे गजलकेँ बहरमे कोना आनी। तँ चलू "अनिल" जीक गजल रचना प्रकियापर। अनिलजी कहै छथि--
"हम पहिने एकटा गजल अहाँ सभकेँ सामनेमे राखि रहल छी तकर बाद ओकरा विवेचित करब--

गजल

टूटल छी ते गजल कहै छी
भूखल छी तें गजल कहै छी

आफिस आफिस गेलौ हमहूँ
लूटल छी तें गजल कहै छी

घरमे बैसल दुनियाँ देखू
गूगल छी तें गजल कहै छी

खूब जनै छी खापड़िकेँ हम
भूजल छी छी तें गजल कहै छी

उक्खरि और समाठ जनैत छी
कूटल छी तें गजल कहै छी

यात्रीजीकेँ अहाँ नवतुरिया
सूतल छी तें गजल कहै छी

हम खट्टर कक्काके तबला
फूटल छी तें गजल कहै छी

आब ऐ गजलक मतलाकेँ देखू

टूटल छी तें गजल कहै छी
भूखल छी तें गजल कहै छी

ऐमे जँ पहिल पाँतिक मात्रा क्रम लेबै तँ हेतै
टूटल=2
छी=2
तें=2
गजल=12 वा 21 मुदा उच्चारण हिसाबसँ 12 बेसी ठीक अछि तँए हम 12 लेलहुँ।
कहै=12
छी=2
मने पहिल पाँतिक मात्राक्रम भेल 222212122
आब दोसर पाँतिपर आउ—

भूखल छी तें गजल कहै छी
एकर मात्राक्रम भेल=
भूखल=22
छी=2
तें=2
गजल=12 वा 21 मुदा उच्चारण हिसाबसँ 12 बेसी ठीक अछि तँए हम 12 लेलहुँ।
कहै=12
छी=2
मने दोसरो पाँतिक मात्राक्रम भेल 222212122

मने पहिल दू पाँति अरबी हिसाबसँ बहरमे भेल। आब तेसर पाँति देखू

आफिस-आफिस गेलौं हमहूँ

एकर मात्राक्रम हेतै
आफिस=22
आफिस=22
गेलौं=22
हमहूँ=22
मने तेसर पाँतिक मात्राक्रम भेलऽ2222222
मने मतलाक दूनू पाँतिक मात्राक्रमसँ ई मात्राक्रम अलग अछि। एकरे लोक कहै छै बहरक टुटनाइ वा जे अहाँक गजल बहरमे नै अछि। हम एकरा सुधारबाक लेल अपना हिसाबसँ एना केलहुँ--

टेबुल तर जोर छै कहब हम

एकर मात्राक्रम हेतै
टेबुल=22
तर=2
जोर=21
छै=2
कहब=12
हम=2
मने ऐ पाँतिक मात्राक्रम छै 222212122। आब देखू जे मतलाक दूनूक पाँतिक मात्राक्रम संगे तेसरो पाँतिक मात्राक्रम बैसि रहल छै। मोन राखू मतलाक पहिल पाँतिमे जे मात्राक्रम छै ओइ गजलक सभ पाँतिमे ओएह मात्राक्रम रहबाक चाही। इएह भेल बहरक निर्वाहन।
चारिम पाँतिक मात्राक्रम ठीक अछि पाँचम पाँतिमे फेर गड़बड़ा गेल पाँचम पाँति अछि--

घरमे बैसल दुनियाँ देखू
मने 22222222,मुदा ई गलत अछि। हम एकरा एना लेलहुँ

बैसल बैसल तँ पाबि गेलहुँ
मने 222212122
छठम पाँति ठीक अछि। मुदा सातम पाँति फेर गड़बड़ा गेल
खूब जनै छी खापड़िकेँ हम
मने 211222222 हम एकरा सुधारि एना लिखलहुँ-

यारी छल बालु संग खुब्बे
मने 222212122
आठम पाँति ठीक अछि मुदा फेर नवम पाँतिमे वएह दिक्कत

उक्खरि और समाठ जनैत छी

एकर मात्राक्रम भेल
उक्खरि=22
और=21
समाठ121
जनैत=121
छी=2
मने 22211211212
हम एकरा सुधारि एना लिखलहुँ-

उक्खरि संगे समाठ एलै
मने
उक्खरि=22
संगे=22
समाठ=121
एलै=22

मात्राक्रम भेल- 22212122
दसम पाँति ठीक अछि। एगारहम पाँति फेर गलत अछि

यात्रीजीकेँ अहाँ नवतुरिया
यात्री=22
जी=2
केँ=2
अहाँ=12
नवतुरिया=222
एकर मात्राक्रम भेल
222212222
हम एकरा एना सुधारलहुँ

जागल लोकक तँ गीत अद्भुत

जागल=22
लोकक=22
तँ=1
गीत=21
अद्भुत=22

मने 222212122
बारहम पाँति ठीक अछि। तेरहम पाँति फेर गलत।

हम खट्टर कक्काकेँ तबला
22222222

हम एकरा एना देलहुँ
घैला छी हम सराध घाटक

मने 222212122
चौदहम आ अंतिम पाँति ठीक अछि। आब हम ऐ गजलकेँ पूरा दऽ रहल छी जे की ठीक भेल अछि (ऐ सुधरल गजलमे तें केर बदालमे हम तँइ लेलहुँ अछि। ऐसँ मात्राक्रममे कोनो फर्क नै हेतै)

गजल

टूटल छी तँइ गजल कहै छी
भूखल छी तँइ गजल कहै छी

टेबुल तर जोर छै कहब हम
लूटल छी तँइ गजल कहै छी

बैसल बैसल तँ पाबि गेलहुँ
गूगल छी तँइ गजल कहै छी

यारी छल बालु संग खुब्बे
भूजल छी तँइ गजल कहै छी

उक्खरि संगे समाठ एलै
कूटल छी तँइ गजल कहै छी

जागल लोकक तँ गीत अद्भुत
सूतल छी तँइ गजल कहै छी

घैला छी हम सराध घाटक
फूटल छी तँइ गजल कहै छी

सभ पाँतिमे 222-212-122 मात्राक्रम अछि।

ई सुधार वा परिवर्तन मात्र बहरक निर्वहन देखेबाक लेल कएल गेल अछि। हमरा पूरा विश्वास अछि जे ऐसँ अहाँ सभ सेहो बुझि गेल हेबै जे बहरक निर्वाह कोना हो।”

अइ ठाम धरि आबि अहाँ सभ पूर्ण रूपेण जानि गेल हेबै जे मात्राक्रम निर्धारण आ बहरक निर्धारण, काफिया ओ रदीफक निर्धारण कोना होइत छै। बहरक निर्धारण करैत काल किछु छूटो भेटै छै जाहिसँ किछु लघुकेँ दीर्घ वा किछु दीर्घकेँ लघु मानि लेल जाइत छै मुदा ओ छूट सभ मूल नियम नै छै तँइ एहिठाम ओकर उल्लेख नै अछि। पाठक ओकरा "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास"मे पढ़थि। मुदा एहिठाम हम ओहि छूटमेसँ एक मात्र उदाहरण देब जकरा लोक बहरे-मीरक नामसँ जानै छथि। चूँकि ई बहर सभसँ आसान छै आ कोनो नव गजलकार लेल सुविधाजनक रहै छै तँइ एहिठाम हम ओकरा देब मुदा मोन राखू जे बहरे-मीर मात्र नव गजलकार लेल छै। पुरान गजलकार बहरे-मीरक प्रयोग तखने करथि जखन कि हुनका बुझानि जे भाव एहन छै जे एहिसँ पहिने कहल नै गेलैए आ आन बहरमे लेने ओ भाव बिगड़ि जेतै तखने पुरान गजलकार बहरे-मीरक प्रयोग करथि। आन छूटक विवरण 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास' मे भेटत। ओना नव गजलकार पहिने छूटक चक्करमे नै पड़थि सएह नीक। दोसर बात ई जे बहर बहुत प्रकारक होइत छै सेहो जनबाक लेल 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास' पढ़ल जाए। स्थापित बहरक अतिरिक्त मैथिलीमे नव बहरक प्रयोग हेबाक चाही। एहि लेल साधारण नियम छै जे अहाँक पहिल पाँति जाहि मात्राक्रममे अछि सएह गजलक सभ शेरक पाँतिमे दियौ। एकर बहुत रास फाइदा छै आ से जनबाक लेल वएह पोथी पढ़ू। अंतमे बहरे-मीर देखि ली- दू टा अलग-अलग शब्दक अक्षरकेँ मिला एकटा दीर्घ सेहो मानल जा सकैए बशर्ते की ओहि गजलक हरेक पाँतिमे दीर्घ हेबाक चाही। उदाहरण लेल जँ कोनो गजलक मतलाक पहिल पाँति एहन होइ ---

तोहर आँचर आब हमर जिनगी अछि

एकर मात्रा क्रम अछि 22-22-211-22-22

मुदा ऐमे छूट लेल जा सकैए आ एकरा 22-22-22-22-22 रूपमे सेहो

लेल जा सकैए आ शाइर एकर निच्चा बला पाँति सभमे 22-22-22-22-22 लऽ गजल पूरा कऽ सकै छथि (उर्दूक बहुत रास शाइर ऐ बहरमे 121 के सेहो 22 मानै छथि आ हमरा हिसाबें ई आर बेसी सुविधा दै छै गजलमे कारण मैथिली बहुत रास शब्द लघु-दीर्घ-लघु केर आधारपर अछि जेना “उतान”, लगान” बथान” आदि तँइ ईहो छूट मैथिलीमे मान्य हएत। संगे-संग अइ छूटक ईहो लाभ जे दूटा अलग शब्दक कारण जँ लघु-दीर्घ-लघु बनि रहल हो तखनो ई छूट भेटत जेना “लोक छै बहुत” 2222 मानल जाएत। उर्दूमे बेसी दूर-दूर बलाकेँ लघुकेँ सेहो दीर्घ मानल जाइए आ कोनो दीर्घकेँ लघु मानि कऽ सेहो आन लघुमे जोड़ि देल जाइए मुदा हमर मानब जे दू टा लघुक बीच जतेक कम दूरी हो ततेक नीक। ऐ बहरकेँ बहरे-मीर सेहो कहल जाइत छै। उर्दूक महान शाइर मीर तकी मीर ऐ बहरक बहुत बेसी प्रयोग केने छथि। कहल जाइत छै जे अरबी बहर आ संस्कृतक प्रचलित छंदकेँ मिला कऽ ऐ बहरक निर्माण भेल छै। संस्कृतमे एहन प्रयोग जयदेव रचित “गीत गोविन्द” मे प्रचुरतासँ भेटैत अछि। ई अलग बात जे संस्कृतमे एहि छंदक नाम अलग ओ व्यवस्था अलग भऽ जाइत छै। प्रस्तुत अछि गीत गोविन्दक दूटा पद--

चंदनवनमालिन् ।-पीतवसन-कलेवर-नील-चर्चित-
केलिस्मितशालीन् ।।-गंडयुग-मंडित-कुंडल-चलन्मणि-

चंद्रककेशम् ।-वलयित-मंडल-शिखंडक-मयूर-चारु-
प्रचुरसर्वेषम् ।।-मुदिर-मेदुर-धनुरनुरंजित-पुरंदर-

आशा अछि जे बात स्पष्ट भेल हएत।

लेखक परिचय
आशीष अनचिन्हार



मूल नाम--आशीष कुमार मिश्र
माता--श्रीमती गम्भीरा मिश्र
पिता- स्व.कृष्ण चंद्र मिश्र
गाम-- भटरा घाट, बिस्फी, मधुबनी
जन्म--4/12/1985
बर्ख 2008 मे शुरू भेल मैथिली गजल एवं शेरो-शाइरीपर केंद्रित इंटरनेट पत्रिका (ब्लाग रूपमे) “अनचिन्हार आखर” http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/ केर संस्थापक ओ संपादक।

प्रकाशित कृति (पोथी केर उपर क्लिक करबै तँ पोथी पढ़बाक लेल खुजि जाएत)**-**
1) अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ ओ कता संग्रह)
2) मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास (ई भर्सन प्रकाशित)
3) मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास (ई भर्सन प्रकाशित)
4) जंघाजोड़ी (गजल संग्रह, ई भर्सन प्रकाशित)
5) मैथिली गजलक Ready Reckoner (मैथिली गजल व्याकरणक संक्षिप्त रूप, ई भर्सन प्रकाशित)
6) कुमारि इच्छा (गजल संग्रह, ई भर्सन प्रकाशित)
7) शब्द-अर्थ-शक्ति (स्वतंत्र रूपें मैथिली गजलक पहिल आलोचना पोथी), ई-भर्सन प्रकाशित
संपादित पोथी-

1) स्वतंत्रचेता (अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व, विदेहक अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर संशोधित रूप, बर्ख-2020 शशि प्रकाशन, कालिकापुर, सुपौल)

श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक संगे सह-संपादित पोथी
1) <u>मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (संपादित रूपमे मैथिली गजल आलोचनाक पहिल पोथी), ई-भर्सन प्रकाशित</u>
2) <u>मैथिलीक प्रतिनिधि गजल (1905सँ 2022 धरि), ई-भर्सन प्रकाशित</u>
सम्मान--
बर्ख 2014 लेल विदेह भाषा सम्मान (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)सँ पोथी “अनचिन्हार आखर” (गजल संग्रह) लेल सम्मानित।
मेल - ashish.anchinhar@gmail.com

